



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 298]

नई दिल्ली, बुधवार, दिसम्बर 22, 2004/पौष 1, 1926

No. 298]

NEW DELHI, WEDNESDAY, DECEMBER 22, 2004/PAUSA 1, 1926

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं सम्बद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 22 दिसम्बर, 2004

अंतिम निष्कर्ष

विषय :— चीन जनवादी गणराज्य, जापान, अमरीका और ईयू मूल के अथवा वहां से निर्यातित माइका पर्ल पिगमेंट के आयातों से संबंधित पाटनरोधी शुल्क की जांच।

सं. 14/22/2003-डीजीएडी.— 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 तथा उसकी सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 को ध्यान में रखते हुए :

क. कार्य-पद्धति

1. निम्नलिखित कार्य पद्धति अपनाई गयी है :—

- (i) निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे इसके बाद प्राधिकारी कहा गया है) ने चीन जन. गणराज्य, जापान, अमरीका और ईयू (जिन्हें इसके बाद संबद्ध देश कहा गया है) मूल के अथवा वहां से निर्यातित माइका पर्ल पिगमेंट के आयात पर पाटनरोधी शुल्क लगाने हेतु घरेलू उद्योग की ओर से मैसर्स सुदर्शन कैमिकल्स इंडस्ट्रीज लि. (जिसे एतदपश्चात् एससीआई एल कहा गया है) द्वारा दायर एक आवेदन प्राप्त किया था।
- (ii) आवेदक द्वारा दायर किए गए आवेदन की प्रारंभिक जांच से कतिपय त्रुटियों का पता चला जिन्हें बाद में याचिकाकर्ता ने दूर कर दिया। इसलिए इसे समुचित दस्तावेजयुक्त आवेदन माना गया है।
- (iii) प्राधिकारी ने आवेदक द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रथम दृष्ट्या साक्ष्य के आधार पर संबद्ध देशों/क्षेत्रों से संबद्ध वस्तुओं के आयातों के विरुद्ध जांच शुरू करने पर विचार किया। प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमों के उप-नियम 5(5) के अनुसार जांच शुरूआत की कार्यवाही से पहले नई दिल्ली में संबद्ध देशों के दूतावासों/प्रतिनिधियों को भी पाटन के आरोपों के संबंध में सूचित किया।
- (iv) प्राधिकारी ने जांच शुरूआत की सार्वजनिक सूचना की एक प्रति सभी ज्ञात निर्यातकों/आयातकों और उद्योग/उपयोक्ता संघों (जिनके ब्यौरे आवेदक द्वारा उपलब्ध कराए गए थे) को भेजी और उन्हें क्रमशः नियम 6(2), 6(3) और 6(4) के अनुसार लिखित में अपने विचारों से अवगत कराने का

एक अवसर प्रदान किया। प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के अनुसार ज्ञात चीनी निर्यातकों को एम ई टी (बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार) प्रश्नावली की प्रतियां भी भेजीं।

- (v) प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पार्टियों को विभिन्न पार्टियों द्वारा प्रस्तुत किए गए सभी साक्ष्यों के अगोपनीय अंशों वाली सार्वजनिक फाइल उनके अनुरोध पर उपलब्ध करवायी थी।
- (vi) प्राधिकारी ने केन्द्रीय उत्पाद एवं सीमाशुल्क बोर्ड (सी बी ई सी) और वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डी जी सी आई एण्ड एस), कोलकाता से जांच की अवधि सहित पिछले तीन वर्षों के दौरान संबद्ध वस्तुओं के आयातों के ब्यौरे उपलब्ध कराने का अनुरोध किया था।
- (vii) प्राधिकारी ने हितबद्ध पार्टियों को सुनने के लिए 29/4/2004 को एक सुनवाई आयोजित की जिसमें हितबद्ध पक्षकारों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। अपने विचार प्रस्तुत करने वाली सभी पार्टियों से मौखिक रूप से व्यक्त किए गए विचारों को लिखित में दर्ज कराने का अनुरोध भी किया गया। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने इन जांच परिणामों में प्राप्त इस प्रकार के अनुरोधों पर विचार किया।
- (viii) सामान्य स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जी ए पी पी) के आधार पर तथा याचिकाकर्ता द्वारा दी गयी सूचना के आधार पर संबद्ध वस्तु के उत्पादन की ईष्टतम लागत और भारत में माल को बनाने और बेचने की लागत का परिकलन करने के लिए लागत जांच की।
- (ix) प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना का आवश्यक सीमा तक सत्यापन किया।
- (x) प्राधिकारी ने याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत की गयी सूचना का आवश्यक सीमा तक सत्यापन किया।
- (xi) प्राधिकारी ने चीन जनवादी गणराज्य और ईयू के सहयोगी निर्यातकों के परिसरों का मौके पर सत्यापन किया।
- (xii) पाटनरोधी नियमों के नियम 16 के अनुसार इन निष्कर्षों के लिए विचारित अनिवार्य तथ्यों को ज्ञात हितबद्ध पार्टियों के समक्ष 30.11.2004 को प्रकट किया गया और 12.12.2004 तक अपनी टिप्पणियां प्रस्तुत करने का समय दिया। प्राप्त टिप्पणियों पर इन जांच परिणामों में उचित विचार किया गया है।
- (xiii) प्राधिकारी ने 1 अप्रैल, 2002 से 30 सितम्बर, 03 तक की अठारह महीनों की अवधि को जांच अवधि माना और जांच की पाटन अवधि अर्थात् अप्रैल, 2002- सितम्बर, 2003 तक की अवधि के साथ 2000-2001 और 2001-02 की अवधि के लिए क्षति का विश्लेषण किया।
- (xiv) इस अधिसूचना में xxx चिह्न से हितबद्ध पार्टी द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गयी सूचना प्रदर्शित होती है और नियमों के अंतर्गत प्राधिकारी ने इसे गोपनीय ही माना है।

**(ख) विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु :**

2. जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना में विचारित एवं वर्णित उत्पाद " लस्टरस/शाइनिंग/फ्रोस्टेड प्रभाव वाले जैसे पर्ल सैन्ट प्रभाव, मैटलिक प्रभाव वाला कतिपय अकार्बनिक रंजक/रंगदार कारक था जिसे बाजार में वाणिज्यिक रूप से टाइटानियम डाइऑक्साइड अथवा आयरन ऑक्साइड कोटेड माइका पर्ल पिगमेंट अथवा पर्ल लस्टर पिगमेंट्स यथा पर्ल पिगमेंट कहा जाता है।" जांच की प्रक्रिया के दौरान निर्यातक और आयातक द्वारा विचाराधीन उत्पाद संबंधी मुद्दे को उठाया गया था और उन्होंने ऑटोमोटिव और माइका पर्ल पिगमेंट के कार्मेटिक ग्रेडों को शामिल न करने का अनुरोध किया था। माइका पर्ल पिगमेंट का विनिर्माण

एवं प्रयोग तीन अनुप्रयोगों खासकर ऑटोमोटिव, कॉस्मेटिक और औद्योगिक अनुप्रयोगों में किया जाता है । माइका पर्ल पिगमेंट्स तीन ग्रेडों में उपलब्ध हैं;

- (क) औद्योगिक ग्रेड का प्रयोग वस्त्रों की छपाई, प्लास्टिक उद्योगों और अनेक औद्योगिक अनुप्रयोगों में किया जाता है;
- (ख) कॉस्मेटिक ग्रेड का प्रयोग रंग कॉस्मेटिक्स और सौंदर्य प्रसाधनों में किया जाता है ; और
- (ग) ऑटोमोटिव ग्रेड का प्रयोग ऑटोमोटिव पेंट और अन्य पेंटों में किया जाता है ।

3. निर्यातक ने अनुरोध किया है कि ऑटोमोटिव ग्रेड माइका पर्ल पिगमेंट का जांच अवधि के दौरान मैसर्स सुदर्शन कैमिकल्स इंडस्ट्रीज लि. द्वारा न तो उत्पादन किया गया है और न ही उसकी बिक्री की गयी है । उन्होंने यह भी अनुरोध किया है कि फ्लोरिडा जांच प्रमाणन जो ऑटोमोटिव ग्रेड के वाणिज्यिक उत्पादन के लिए अनिवार्य है, जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के पास उपलब्ध नहीं था । इसलिए पाटनरोधी जांच में ऑटोमोटिव ग्रेड को विचाराधीन उत्पाद से अलग करने की जरूरत है । उन्होंने यह भी तर्क दिया है कि वे विभिन्न कॉस्मेटिक अनुप्रयोगों के लिए कॉस्मेटिक पिगमेंट्स के विभिन्न ग्रेड/ग्रेडों की बिक्री करते हैं । घरेलू उद्योग के पास वह रेंज नहीं है जो मर्क पेश करता है और यह बात नोट करना महत्वपूर्ण है कि मर्क उत्पाद की कीमत घरेलू उद्योग की कीमतों से अधिक हैं । वे वही गुणवत्ता प्रदान करते हैं जो उनके घरेलू बाजार में बेची जाती है, जबकि घरेलू उद्योग घरेलू बाजार में कॉस्मेटिक ग्रेड के रूप में औद्योगिक ग्रेड के पिगमेंटों की बिक्री करता है चूँकि उन्होंने कॉस्मेटिक ग्रेड का उत्पादन नहीं किया है इसलिए इसे इस जांच में विचाराधीन उत्पाद से अलग कर दिया जाए ।

4. घरेलू उद्योग ने निर्यातक के तर्क का खण्डन किया है और कहा है कि यह कहना गलत है कि वे ऑटोमोटिव ग्रेड माइका पर्ल पिगमेंट्स का उत्पादन करने के लिए सक्षम नहीं हैं । घरेलू उद्योग ने ऑटो ग्रेड पिगमेंट का सफलतापूर्वक परीक्षण उत्पादन पहले ही पूरा कर चुका है । चूँकि वाणिज्यिक व्यापार करने से पूर्व " फ्लोरिडा जांच " पूरी करनी आवश्यक है इसलिए घरेलू उद्योग इस समय यह जांच कर रहा है ।

5. हितबद्ध पक्षकारों के तर्कों की जांच की गयी थी और यह मालूम हुआ था कि ऑटोमोटिव ग्रेड माइका पर्ल पिगमेंट की बिक्री केवल तभी की जा सकती है जब उत्पाद की विशिष्ट जांच जिसे फ्लोरिडा जांच कहते हैं, की गयी हो । जिसमें उत्पाद को एक कतिपय न्यूनतम अवधि में उत्पाद की जांच की जानी जरूरी है । घरेलू जांच की प्रक्रिया के दौरान आवेदक ने कहा है कि फ्लोरिडा जांच में ऑटोमोटिव ग्रेड की जांच पूरी नहीं हुई है । उन्होंने यह भी कहा है कि फ्लोरिडा जांच उत्पाद की वाणिज्यिक बिक्री के लिए आवश्यक अपेक्षा है, भले ही ऑटोमोटिव ग्रेड का उत्पादन किया गया हो ।

6. कॉस्मेटिक ग्रेड माइका पर्ल पिगमेंट को शामिल न करने के निर्यातक के तर्क की जांच की गयी थी और यह पाया गया था कि घरेलू उद्योग घरेलू अनुप्रयोगों के लिए इस उत्पाद का उत्पादन कर रहा है और मर्क से भिन्न कीमत पर घरेलू बाजार में इसकी बिक्री कर रहा है । निर्यातकों ने यह तर्क दिया है

कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित गुणवत्ता घटिया है और इसका प्रयोग घरेलू अनुप्रयोगों के लिए नहीं किया जा सकता है जबकि मर्क उत्पादों की बिक्री प्रतिष्ठित सौंदर्य एवं सौंदर्य प्रसाधन उद्योगों को की जा रही है। अपने तर्क के समर्थन में उन्होंने इसे शामिल न करने हेतु साक्ष्य संलग्न किए हैं। निर्यातक के तर्क की भारत में आयातित कार्मेटिक ग्रेडों की प्रचलित कीमत ढाँचों और स्वदेश में उत्पादित संबद्ध माल के आलोक में जांच की गयी थी। मैसर्स मर्क, जर्मनी और मैसर्स मर्क, इंडिया की जांच प्रक्रिया के दौरान उनके अभिलेखों से यह पाया गया था कि कार्मेटिक अनुप्रयोग हेतु माइका पर्ल पिगमेंटों का भारत में काफी अधिक कीमतों पर आयात किया जाता है और विभिन्न बाजार क्षेत्रों में इसका विस्तार है। घरेलू उद्योग के लिए कार्मेटिक ग्रेड की बिक्री कीमत का सत्यापन किया गया था और यह पाया गया था कि घरेलू अनुप्रयोग हेतु पर्ल पिगमेंट की बिक्री इस ग्रेड के आयातों की औसत उतराई कीमत से काफी कम कीमत पर की जाती है।

7. मै0 मर्क ने अपने प्रकटन विवरण की टिप्पणी में कहा है कि प्राधिकारी ने सौंदर्य प्रसाधन और माइका पर्ल रंजक के ऑटोमोटिव ग्रेडों को छोड़कर विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र को उचित ही निषिद्ध किया है। उन्होंने आगे कहा कि यह भी निश्चित किया जाना चाहिए कि सौंदर्य प्रसाधन और ऑटोमोटिव ग्रेड गलती से पाटनरोधी शुल्क लगाने वाले आयातों की सूची में शामिल नहीं है। घरेलू उद्योग ने प्रकटन विवरण की टिप्पणी में कहा है कि सीमाशुल्क विभाग के लिए ऑटोमोटिव सौंदर्य प्रसाधन और औद्योगिक ग्रेडों में अंतर करना बहुत ही मुश्किल होगा। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने कीमत के आधार पर औद्योगिक और प्रसाधन ग्रेडों में अंतर किया है। यद्यपि, घरेलू उद्योग ने सलाह दी थी कि कृपया सौंदर्य प्रसाधन ग्रेड के औद्योगिक ग्रेड के अंतर्गत आयात निकासी से बचने के लिए कम से कम आयात कीमत को बेंचमार्क कीमत के रूप में अधिसूचित किया जाय। प्राधिकारी ने हितबद्ध पार्टियों के संबंधों की जांच की और विचाराधीन उत्पाद जो कि सौंदर्य प्रसाधन और ऑटोमोटिव ग्रेडों को छोड़र माइका पर्ल रंजक है, पर शुल्क अधिसूचित करने के लिए विचार किया।

8. इस वजह से प्राधिकारी सोचते हैं कि ऑटोमोटिव और सौंदर्य प्रसाधन उपयोगों के लिए माइका पर्ल रंजक को विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र से अलग रखने की जरूरत है। यद्यपि इस जांच में विचाराधीन उत्पाद ऑटोमोटिव और सौंदर्य प्रसाधन ग्रेडों के अलावा माइका पर्ल रंजक है। वर्तमान आवेदन में विचाराधीन उत्पाद है कुछ अकार्बनिक रंजक/रंजन कारकों/जो दीप्तिमान/चमकीला/तुषारित प्रभाव जैसे पर्ल सेंट प्रभाव, धात्विक प्रभाव वाले हैं; ऑटोमोटिव और सौंदर्य प्रसाधन ग्रेडों के अलावा टाइटेनियम आक्साइड अथवा आयरन आक्साइड कोटेड माइका पर्ल रंजक अथवा पर्ल लस्टर रंजक अथवा पर्ल रंजक के रूप में बाजार में वाणिज्यिक रूप से जाने जाते हैं। यह एक रंजनकारी कारक है जो पर्ल सेंट प्रभाव देता है। अकार्बनिक रंजकों में धातु यौगिक होते हैं जिसमें कैडमियम सल्फाइड रंजक यथा टाइटेनियम आक्साइड अथवा आयरन आक्साइड पर्ल माइका रंजक कार्बोनेट पर्ल शामिल होते हैं। पर्ल रंजकों का उपयोग उत्पाद पर विशेष पर्ल सेंट अथवा चमकीला प्रभाव लाने के लिए सजावट के प्रयोजनार्थ किया जाता है। कोई उत्पादक अलग-अलग आकार में रंजकों की आपूर्ति कर सकता है। इसी प्रकार किसी उत्पादक के लिए यह भी व्यवहारिक है कि वह विशिष्ट अंतिम उपभोक्ता की जरूरत के अनुकूल निर्धारित स्वरूप के रंजकों की आपूर्ति करे। लागत और कीमतें रंजक के आकार और रंग के अनुसार अलग-अलग होती है। माइका पर्ल रंजक सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 के अध्याय 32 के अंतर्गत वर्गीकृत है।

9. घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित संबद्ध वस्तु और संबद्ध देशों से आयातित उत्पाद के बीच कोई अंतर नहीं पाया गया था। आवेदक द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु आयातित उत्पाद से वाणिज्यिक और तकनीकी रूप से प्रतिस्थापनीय है और इस प्रकार समान वस्तु की शर्तें पूरी होती हैं। प्राधिकारी ने यह पाया है कि

निर्यातकों से प्राप्त सूचना के आधार पर घरेलू संबद्ध वस्तु आयातित उत्पाद के समान है। अतः प्राधिकारी यह मानते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु और संबद्ध देशों से निर्यातित वस्तु पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(घ) के अर्थ के भीतर समान वस्तु है।

### ग. घरेलू उद्योग

10. याचिका घरेलू उद्योग की ओर से मै0 सुदर्शन केमिकल्स इंडस्ट्रीज लि0 द्वारा प्रस्तुत की गयी है। यह बहु उत्पाद कंपनी है और अनेक उत्पादों का उत्पादन कर रही है। आवेदक ने पिछले तीन वर्षों से संबद्ध वस्तु का आयात नहीं किया है और अनेक देशों को संबद्ध वस्तु का निर्यात किया है।

11. निर्यातक द्वारा कहा गया है कि आवेदक ने माइका पर्ल रंजक जो कि 4179 है, के औद्योगिक ग्रेड के केवल एक मद के लिए सूचना प्रस्तुत की है और माइका पर्ल रंजकों के औद्योगिक ग्रेड के मद कोड 4179 की यूनिट कीमत को शामिल करते हुए सभी ग्रेडों के लिए सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन की गणना की है। घरेलू उद्योग ने सभी ग्रेडों के आयात जो कि उनके द्वारा विनिर्मित भी नहीं हैं, को रोकने के लिए जानबूझ कर बृहद् रूप से उत्पाद को परिभाषित किया है। हालांकि आवेदक माइका पर्ल रंजकों के सभी ग्रेडों के संबंध में वर्तमान आवेदन प्रस्तुत करने में असमर्थ रहा है।

12. प्राधिकारी ने हितबद्ध पार्टियों के तर्कों की जांच की और नोट करते हैं कि आवेदक ने घरेलू उद्योग के दावे को सिद्ध करने के लिए संबद्ध वस्तु की लागत/वित्तीय सूचना के साथ-साथ आयात के समान ग्रेड के लिए लागत/वित्तीय सूचना प्रदान की है। आवेदक कंपनी जांचाधीन संबद्ध वस्तु की एकमात्र विनिर्माता है और वह संबद्ध वस्तु के घरेलू उत्पादन के 100 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करती है। इसलिए, प्राधिकारी मानते हैं कि मै0 सुदर्शन केमिकल्स इंडस्ट्रीज लि0 पाटनरोधी नियमावली के नियम 2 (ख) के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग का प्रतिनिधित्व करती है।

### घ. अन्य मुद्दे

#### घ.1 अगोपनीय सूचना का प्रस्तुतीकरण

13. घरेलू उद्योग ने अनुरोध किया है कि निर्यातक ने गोपनीयता के अति प्रयोग का आश्रय लिया है। निर्यातक द्वारा अगोपनीय आधार पर प्रदत्त सूचना, गोपनीय आधार पर प्रदत्त सूचना के सारांश को समझने में सहायक नहीं है। उन्होंने आगे कहा है कि निर्यातक द्वारा दाखिल सम्पूर्ण प्रस्तुतीकरण अगोपनीय अंश की मांग की अवहेलना है। निर्यातकों ने भी तर्क दिया है कि आवेदन में निर्यातकों के हितों का प्रभावी एवं तर्कपूर्ण ढंग से रक्षा करने के लिए अगोपनीय अंश में पर्याप्त सार प्रस्तुत नहीं किया गया है जिससे डब्ल्यू टी ओ पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 6.5.1 का उल्लंघन होता है।

14. घरेलू उद्योग और निर्यातकों दोनों ने तर्क दिया है कि उनके उत्तरों के अगोपनीय अंश अपर्याप्त थे और अनेक सूचनाएं/आंकड़े गोपनीय अंश से लिए गए थे। हितबद्ध पार्टियों ने एक बार फिर प्रकटन विवरण की टिप्पणी में प्रश्न उठाया है कि अपने गोपनीय अनुरोधों के सार को तर्क पूर्ण ढंग से अगोपनीयता प्रदान करने हेतु गलत ढंग अपनाया गया है। हितबद्ध पार्टियों के तर्कों को जांचा गया था

और यह नोट किया जाता है कि हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रदत्त अगोपनीय उत्तरों को सार्वजनिक फाइल में रखा गया था और सभी हितबद्ध पार्टियों के लिए उपलब्ध कराया गया था। उनके अनुरोधों में कीमत और लागत से संबंधित अनेक सूचनाओं को संबंधित हितबद्ध पार्टियों द्वारा गोपनीय रखा गया था और प्राधिकारी द्वारा उनको गोपनीय ही माना गया था।

## घ.2 अपर्याप्त और गलत सूचना

15. निर्यातक ने कहा है कि आवेदक द्वारा निर्यात कीमत, सामान्य मूल्य, पाटन मार्जिन और क्षति वर्गीकरण की गणना हेतु एकरूपता का आधार अख्तियार नहीं किया गया है। उन्होंने आगे कहा है कि आवेदक ने संबद्ध देश के खिलाफ वर्तमान पाटनरोधी जांच शुरू करने के लिए प्रथम दृष्टया मामले को स्थापित करने हेतु अनेक स्रोत से आंकड़े का चुनिन्दा आधार पर चुनाव किया है। यहाँ तक कि प्राधिकारी को गुमराह करने के लिए डी जी सी आई एंड एस, आई वी आई एस और केमिकल्स ट्रेड इंटेलीजेंस के आंकड़े का चुनिन्दा आधार पर प्रयोग किया गया है। वर्तमान आवेदन प्रकटन की अपर्याप्तता, सही तथ्यों के छुपाव और विधिक अशक्तता से पूर्ण है।

16. घरेलू उद्योग ने अनुरोध किया है कि हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत सम्पूर्ण अनुरोध कानून और तथ्यों दोनों पर अरक्षणीय एवं अपर्याप्तता तथा अशुद्धता को विस्थापित करने से संबंधित है। हितबद्ध पार्टियों ने मामले की परिस्थितियों एवं तथ्यों के बिना, चुनिन्दा आधार पर ग्वाटेमाला सीमेंट मामले में पैनल रिपोर्ट को अग्रेषित किया है।

17. मै0 मर्क ने प्रकटन विवरण की टिप्पणी में अनुरोध किया है कि प्राधिकारी ने डी जी सी आई एंड एस की आयात सांख्यिकी पर विचार नहीं किया है। वह घरेलू उद्योग द्वारा अन्य स्रोतों से उपलब्ध कराए गए आंकड़े और कुल आयातों जिनका उल्लेख नहीं किया गया है, के पाटित आयातों के आयात आंकड़े की पृथक्ता प्रणाली और कुछ महत्वपूर्ण आंकड़ों पर निर्भर रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा है कि जापान को इस जांच से अलग रखना उचित है जबकि चीन जनवादी गणराज्य को अलग रखना उपयुक्त नहीं है क्योंकि याचिकाकर्ता पाटित आयातों के कारण क्षति का सामना कर रहा है। प्राधिकारी ने जांच की और पाया कि चीन जनवादी गणराज्य के आयातों की मात्रा न्यूनतम निर्धारित सीमा से अधिक है और जापान से आयात विचाराधीन संबद्ध वस्तु नहीं है। यह नोट किया जाता है कि प्राधिकारी ने विभिन्न स्रोतों से उपलब्ध कराए गए आयात विवरण एवं मांग के निर्धारण के आधार पर आयात की मात्रा निर्धारित की है। इस जांच के उद्देश्य हेतु अपाटित आयातों को अलग किया गया है और क्षति वर्गीकरण के लिए केवल पाटित आयातों पर विचार किया गया है।

18. प्राधिकारी ने इन तर्कों की जांच की और पाया कि डी जी सी आई एंड एस के माइका पर्ल रंजक के आयात के आंकड़े विश्वसनीय नहीं हैं क्योंकि उसी शीर्ष के अंतर्गत अनेक अन्य अकार्बनिक रंजक भी रखे गए हैं। अन्य स्रोतों पर आधारित सूचना भी पूर्ण नहीं थी क्योंकि इसमें भी सभी सीमाशुल्क पत्तनों से माइका पर्ल रंजक के आयात को शामिल नहीं किया गया है। इसलिए डी जी सी आई एंड एस के आंकड़े अथवा अन्य स्रोतों पर पूरी तरह भरोसा करना उपयुक्त नहीं होगा। घरेलू उद्योग ने कहा है कि इस उत्पाद की मांग जांच अवधि के दौरान 1000 से 1200 मी.टन के बीच रही है जबकि डी जी सी आई एंड एस के सांख्यिकीय आयात आंकड़े 17000 मी.टन से अधिक का आयात दर्शाते हैं। स्थिति में, इस जांच के उद्देश्य हेतु प्रतिवादी निर्यातकों के आयात की मात्रा सहित विभिन्न स्रोतों से उपलब्ध कराई गयी सूचना एवं परस्परगत निर्धारण के आधार पर आयातों को निर्धारित करना उपयुक्त पाया गया था।

## ड. पाटन मार्जिन के परिकलन के लिए पद्धति

### ड.1. घरेलू उद्योग के विचार

19. घरेलू उद्योग के विचार संक्षिप्त रूप में निम्नानुसार हैं :-

(i) मै0 मर्क ने अमरीका, जापान और यूरोप से अपने निर्यातों के संबंध में उत्तर दिया है। निर्यातक द्वारा प्रस्तुत उत्तरों का अगोपनीय रूपांतर पूरी तरह से अधूरा है और उससे गोपनीय आधार पर निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना की कोई सामग्री समझ में नहीं आती है।

(ii) निवेदनों में विभिन्न कंपनियों के बीच परस्पर संबंध के बारे में कोई सूचना नहीं दी गई। घरेलू उद्योग यह समझता है कि विभिन्न देशों में संयंत्रों वाले निर्यातकों और मर्क के नेगम मुख्यालय के बीच कोई प्रतिपूरक व्यवस्था विद्यमान है।

(iii) पाटन मार्जिन विचाराधीन उत्पाद के आयातों का पर्याप्त अनुपात में प्रतिनिधित्व करने वाले ग्रेड के लिए निर्धारण के आधार पर विचाराधीन उत्पाद के लिए निर्धारित किया जा सकता है। इसी के साथ आवेदक ने भारत में आयातित सभी ग्रेडों के संबंध में आयातों के बारे में सूचना उपलब्ध कराई थी।

(iv) प्राधिकारी ने ऐसी कीमत के आधार पर निर्यात कीमत का सही रूप से निर्धारण किया है जिस पर पाटनरोधी करार और भारतीय पाटनरोधी नियमावली के उपबंधों के अनुसार आश्रित क्रेताओं को आयातित उत्पाद सर्वप्रथम पहली बार बेचा गया था। मै0 मर्क जर्मनी के लिए पूरे विश्व में अपनी संबद्ध कंपनियों में से से किसी को अधिक लाभ पर बुकिंग की नीति के आधार पर मै0 मर्क इंडिया को किसी कीमत पर सामग्री बेचना व्यावहारिक हो सकता है।

### ड. 2. निर्यातकों के विचार

20. निर्यातक ने यह निवेदन किया है कि भारत के क्रेता किसी खंड की विशिष्ट शेड के लिए विशेष रूप से आग्रही नहीं हैं जिसे वे विदेशी क्रेताओं की तुलना में खरीदते हैं। इसके परिणामस्वरूप शेड में अंतर के कारण यूरोप में विशेष रूप से आंशकित खण्डों (आफ-पैक औद्योगिक खण्ड) की बिक्री नहीं होती परन्तु उन्हें भारत में आसानी से स्वीकार कर लिया जाता है। अतः इन " आफ-पैक " औद्योगिक खण्डों की कीमतें मर्क के लिए स्थानीय बाजारों की तुलना में भारतीय बाजार में कम हैं।

### ड. 3. प्राधिकारी द्वारा जांच

21. प्राधिकारी ने धारा 9क(i)(ग) के अनुसार सामान्य कीमत के निर्धारण के प्रयोजनार्थ सभी ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावली की एक प्रति भेजी थी। निम्नलिखित उत्पादकों/निर्यातकों से उत्तर प्राप्त हुए हैं:

- (i) मै0 ईएमडी, यूएसए
- (ii) मै0 मर्क, जापान
- (iii) मै0 मर्क, जर्मनी और
- (iv) मै0 तैजु ग्रुप कं. लि.

22. मै0 डीएसएफ, जर्मनी ने अपने दिनांक 27 जनवरी, 2004 के पत्र सं0 के तहत यह कहा है कि उन्होंने निर्यातक प्रश्नावली प्रस्तुत न करने का निर्णय लिया है क्योंकि आयातों की मात्रा बहुत ही कम है। प्राधिकारी ने मै0 बीएसएफ, जर्मनी को असहयोगी माना है।

23. निर्यातक ने यह तर्क दिया है कि उन्होंने भारत को ऑप्सपैक सामग्री का ऐसा निर्यात किया है जो उनके घरेलू बाजार में नहीं बिकती है। प्राधिकारी ने यह नोट किया है कि भारतीय बाजार में निर्यातक द्वारा निर्यात किया गया ग्रेड निर्यातक द्वारा अपने घरेलू बाजार में बेचा गया ग्रेड ही है जिसमें केवल तथाकथित गुणवत्ता का अंतर है। यह भी नोट किया गया है कि निर्यातित उत्पाद और घरेलू उत्पाद के बीच में कोई संभव अंतर हो सकता है जिसे अनुच्छेद 2.4 के अंतर्गत संभव कीमत समायोजन के लिए ही उत्तम माना जा सकता है जिसके लिए निर्यातक मात्रात्मक और जांच करने योग्य सूचना भेजने में विफल रहा है। यह भी नोट किया गया है कि अनुच्छेद 2.4 के अंतर्गत कोई भी मूल्य समायोजन स्वतः नहीं हो जाता है बल्कि उसके लिए मात्रात्मक और जांच योग्य आंकड़ों/सूचना के आधार पर दावा किया जाता है।

24. संबद्ध वस्तु के सकल आयात में चीन जन. गण. से आयातों का हिस्सा 2.59% है। चीन जनवादी गणराज्य से आयातों की मात्रा न्यूनतम से कम है क्योंकि यह माइका पर्ल रंजक के कुल आयातों में 3 % से कम है। इसलिए चीन जनवादी गणराज्य को इस जांच में संबद्ध देशों से हटा दिया गया है और उनके आयातों की मात्रा क्षति की जांच के प्रयोजनार्थ पाटित आयातों से अलग कर दी गयी है।

25. मै0 मर्क, जापान ने प्रस्तुत किए जाने वाले तरीके और ढंग से उत्तर नहीं भेजा था। उन्होंने भारत को निर्यातों के उत्पादन की लागत, घरेलू बिक्रियों और तीसरे देशों को निर्यातों के संबंध में सूचना प्रस्तुत नहीं की थी। उन्होंने केवल भारत को अपने निर्यातों के बारे में विवरण दिया है जिसमें माइका पर्ल रंजक के आयातों की ग्रेड-वार सूचना दी गई है। यह मालूम होता है कि उन्होंने केवल माइका पर्ल रंजक के ऑटोमोटिव ग्रेड का निर्यात किया है जिसे विचाराधीन उत्पाद से अलग कर दिया है इसलिए जापान को संबद्ध देशों से हटा दिया गया है क्योंकि माइका पर्ल रंजक के ऑटोमोटिव ग्रेड के आयात इस जांच के लिए संबद्ध वस्तु नहीं हैं। जापान से आयातों की मात्रा को क्षति जांच के प्रयोजन के लिए पाटित आयातों से अलग कर दिया गया है।

26. उपर्युक्त दृष्टि से चीन जनवादी गणराज्य और जापान को इस जांच में संबद्ध देशों से अलग कर दिया गया है। इसके बाद केवल ईयू और अमरीका ही इस जांच में संबद्ध देश रह जाएंगे जहाँ भी इसका उल्लेख हो।



**अमरीका****सामान्य मूल्य**

27. मै0 ईएमडी, अमरीका ने निर्यातक प्रश्नावली में पूरा निवेदन प्रस्तुत नहीं किया था। उन्होंने निर्यात के उत्पादन की लागत घरेलू बिक्रियों और तीसरे देशों को निर्यातों के बारे में सूचना प्रस्तुत नहीं की थी। उन्होंने जांच अवधि के दौरान अपने घरेलू बाजार में घरेलू बिक्रियों से संबंधित सूचना भी प्रस्तुत नहीं की थी। इसलिए मै0 ईएमडी, अमरीका को असहयोगी निर्यातक समझा गया है। चूँकि अमरीका से किसी भी निर्यातक/उत्पादक ने पूरी तरह सहयोग नहीं दिया है इसलिए सामान्य मूल्य का परिकलन पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार अमरीका के सभी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए \*\*\*\* अमरीकी डॉलर/कि.ग्रा. के रूप में किया गया है।

**निर्यात कीमत**

28. निर्यातक ने जांच अवधि के दौरान भारत में संबद्ध वस्तुओं के निर्यातों के बारे में सूचना प्रस्तुत की है। निर्यातक द्वारा दावा की गई निर्यात कीमत पर विचार किया गया है और घरेलू उद्योग द्वारा दावा किए गए समायोजनों को कारखाना बाह्य निर्यात कीमत की गणना करने के लिए शामिल किया गया है। कारखाना बाह्य निर्यात कीमत का निर्धारण अमरीका के सभी निर्यातकों/उत्पादकों के लिए \*\*\*\* अम.डा./कि.ग्रा. के रूप में किया गया है।

**यूरोपीय संघ****सामान्य कीमत**

29. मै0 मर्क, जर्मनी ने निर्यातक प्रश्नावली में उत्तर प्रस्तुत किया है उन्होंने औद्योगिक माइका पर्ल रंजक के मुख्यतः दो ग्रेडों अर्थात् पिरियोडिन 100, पिरियोडिन 111 के बारे में सूचना प्रस्तुत किए जो भारत में संबद्ध वस्तुओं के कुल निर्यातों का 92% हिस्सा बनता है और घरेलू उद्योग ने भी इन तथ्यों को माना है तथा उनके द्वारा उत्पादित तुलनीय ग्रेडों के लिए क्रमशः लागत/वित्तीय सूचना प्रस्तुत की है। जांच के दौरान घरेलू बिक्रियों का उनके रिकॉर्ड से सत्यापन किया गया था। संबद्ध वस्तु के उत्पादन की लागत की जांच उनके रिकॉर्डों से की गई थी और इसका मिलान जांच अवधि के लाभ और घाटे के लेख से भी किया गया था। घरेलू बिक्री कीमत व्यापार के सामान्य प्रक्रिया के अंतर्गत पाई गई थी। सामान्य मूल्य दोनों ग्रेडों के लिए अलग-अलग घरेलू बिक्रियों के आधार पर निर्धारित किया गया है और संबद्ध वस्तु के लिए भारत औसत सामान्य मूल्य पर परिकलित किया गया है। उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए सामान्य मूल्य का निर्धारण \*\*\*\* अम. डालर/कि.ग्रा. के रूप में किया गया है।

**निर्यात कीमत**

30. निर्यातक ने जांच अवधि के दौरान माइका पर्ल रंजक के दोनों औद्योगिक ग्रेडों अर्थात् इरियोडिन 100 और इरियोडिन 111 के लिए भारत को किए गए संबद्ध वस्तु के निर्यात के बीजक-वार ब्यौरे उपलब्ध

कराए हैं। मै0 मर्क, जर्मनी द्वारा अपनी सहायक कम्पनी मै0 मर्क, इंडिया को सीधे निर्यात किया जा रहा था। निर्यात कीमत अविश्वसनीय पाई गई थी क्योंकि उसकी सहायक कम्पनी को निर्यात किया गया था। ऐसी स्थिति में निर्यात कीमत का परिकलन उस कीमत के आधार पर किया गया है जिस पर आयातित उत्पाद की सर्वप्रथम पुनर्बिक्री स्वतंत्र क्रेताओं को की गई है। मै0 मर्क, इंडिया के संबंध में स्वतंत्र क्रेताओं और मै0 मर्क, जर्मनी के लिए समायोजनों का सत्यापन किया गया है। जांच अवधि के दौरान दोनों ग्रेडों इरियोडिन 100 और इरियोडिन 111 के लिए भारत को अलग-अलग कारखाना निर्यात कीमत निकालने के लिए उनके दावों के संबंध में समायोजनों पर सत्यापित आंकड़ों के आधार पर विचार किया गया है। संबद्ध वस्तु की कारखाना निर्यात कीमत \*\*\* अम. डा./कि.ग्रा. निर्धारित की गई है।

31. दोनों ग्रेडों के लिए पाटन मार्जिन का अलग-अलग निर्धारण किया गया है और तत्पश्चात् संबद्ध वस्तु के लिए भारत औसत पाटन मार्जिन निकाला गया है।

### ईयू के अन्य निर्यातक/उत्पादक

#### सामान्य मूल्य :

32. यह नोट किया जाता है कि ईयू के किसी अन्य निर्यातक/उत्पादक ने जवाब नहीं दिया है। चूँकि ईयू के किसी अन्य निर्यातक/उत्पादक ने उत्तर नहीं दिया था इसलिए सभी अन्य निर्यातकों/उत्पादकों के लिए सामान्य मूल्य का परिकलन पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर किया गया है। अतः ईयू के सभी अन्य निर्यातकों/उत्पादकों के लिए सामान्य मूल्य \*\*\* अम.डा./कि.ग्रा. निर्धारित किया गया है।

### निर्यात कीमत

33. निर्यात कीमत का निर्धारण मै0 मर्क, भारत द्वारा स्वतंत्र क्रेताओं को न्यूनतम बिक्री कीमत के आधार पर किया गया है। कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत ज्ञात करने के लिए सहयोगी निर्यातकों के लिए यथास्वीकृत समायोजनों पर विचार किया गया है। अन्य निर्यातकों/उत्पादकों के लिए कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत को \*\*\*\* अम.डा./कि.ग्रा. के रूप में निर्धारित किया गया है।

### पाटन-मार्जिन

34. ऊपर यथा निर्धारित सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के आधार पर, प्राधिकारी ने पाटन मार्जिन का आकलन निम्नानुसार किया है :-

निर्यातक/उत्पादक	सामान्य मूल्य (अम.डा./कि.ग्रा.)	निर्यात कीमत (अम.डा./कि.ग्रा.)	निर्यात कीमत के % के रूप में पाटन मार्जिन
मै0 मर्क, ईयू	****	****	184.68%
ईयू से अन्य निर्यातक/ उत्पादक	****	****	195.06%
अमरीका से सभी निर्यातक/उत्पादक	****	****	87.38%

## च. क्षति निर्धारण की पद्धति और कारणात्मक संबंध की जाँच

### च.1. घरेलू उद्योग के विचार

35 घरेलू उद्योग के विचार संक्षेप में नीचे दिए गए हैं:

- (i) घरेलू उद्योग ने यह अनुरोध किया है कि विचाराधीन उत्पाद के आयातों के बारे में कोई विस्तृत सूचना उपलब्ध नहीं है, इसलिए माँग का आकलन विभिन्न स्रोतों से आयात मात्राओं के आधार पर किया गया है। संबद्ध देशों से आयात समग्र रूप से काफी अधिक हैं और ये भारत में संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन एवं माँग दोनों के संबंध में अधिक हैं।
- (ii) संबद्ध देशों से आयातों का पहुँच मूल्य, घरेलू उद्योग की बिक्री प्राप्ति से कम है जिसके परिणामस्वरूप भारी कीमत कटौती हुई है और घरेलू उद्योग की कीमतों में कमी हुई है।
- (iii) संबद्ध देशों से निर्यातकों ने भारत को निर्यातों के संबंध में अपनी कीमतों में भारी कमी की है जबकि अपने घरेलू बाजारों में वे इस सामग्री को अधिक कीमतों पर बेच रहे हैं। आयातों के पहुँच मूल्य से प्रतिस्पर्धा करने के लिए घरेलू उद्योग को संबद्ध वस्तु की घरेलू बिक्री कीमत घटाने के लिए बाध्य होना पड़ा है।
- (iv) घरेलू उद्योग के उत्पादन में वृद्धि हुई है। उन्होंने उत्पाद की बढ़ती हुई माँग के मद्देनजर वर्ष 2001-02 में एक नये संयंत्र की स्थापना की है, जिसने फरवरी, 2002 से वाणिज्यिक उत्पादन प्रारंभ कर दिया। तथापि, घरेलू उद्योग अपने नये संयंत्र की क्षमता को इष्टतम नहीं कर पाया है। उत्पादन में वृद्धि और पर्याप्त माँग के बावजूद, क्षमता उपयोग में कमी आई है।
- (v) संबद्ध वस्तु की बढ़ती हुई माँग के परिणामस्वरूप वर्ष 2000-01 और 2001-02 के बीच घरेलू उद्योग की बिक्री मात्राओं में वृद्धि हुई थी। पिछले वर्ष की तुलना में जाँच अवधि में इसमें कमी हुई है। घरेलू उद्योग ने देश में उत्पाद की बढ़ती हुई माँग को ध्यान में रखते हुए काफी अधिक बिक्री मात्राओं का अनुमान लगाया था। तथापि, संबद्ध देशों से आयातों के कारण इसकी बिक्री मात्राओं में, अपेक्षित स्तर तक वृद्धि नहीं हो पाई है। जाँच अवधि में बिक्रियों में गिरावट आई है जबकि इनमें वृद्धि होनी चाहिए थी।
- (vi) घरेलू उद्योग के औसत भण्डारों में कुछ वर्षों में वृद्धि हुई है। यह वृद्धि माँग में भारी वृद्धि के बावजूद प्रदर्शित हुई है और यह घरेलू बाजार में बिक्री मात्राओं में कमी के कारण हुई है।
- (vii) घरेलू उद्योग को इसकी इकाई उत्पादन लागत में वृद्धि के बावजूद अपनी बिक्री कीमतें घटानी पड़ी हैं। आयातों से घरेलू उद्योग पर अत्यधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है और इनसे बाजार में कीमतों में कमी हुई है। कीमत में कमी के कारण पिगमेंट्स की विभिन्न किस्मों की औसत कीमतों में कमी हुई है और विभिन्न ग्रेडों के संबंध में कीमतों में कमी हुई है।
- (viii) घरेलू उद्योग वर्ष 2001-02 तक लाभ कमा रहा था। उन्होंने इन प्रेक्षकों के साथ अपनी क्षमता बढ़ायी थी कि इनसे उच्चतर लाभ एवं आय प्राप्त होगी। तथापि, संबद्ध देशों से हुए पाटन के कारण, घरेलू उद्योग को अब भारी घाटों का सामना करना पड़ रहा है।

- (ix) घरेलू उद्योग को ऐसी स्थिति में पाटित आयातों के कारण अपने रोजगार स्तर को कम करने पर बाध्य होना पड़ा है जबकि घरेलू उद्योग का विस्तार किया गया है और इसका रोजगार बढ़ना चाहिए था। रोजगार स्तर में कमी के साथ वर्ष 2002-03 में बढ़ने के बाद मजदूरी में कमी हुई है।
- (x) चूँकि संबद्ध वस्तुओं के अनेक ग्रेडों का उत्पादन एवं बिक्री की जा रही है इसलिए कीमतों में व्यापक भिन्नता के कारण सभी उत्पाद किस्मों के लिए एक बेंचमार्क कीमत होना व्यवहार्य नहीं होगा। इसलिए पाटनरोधी शुल्क की संस्तुति निर्धारित राशि के रूप में की जा सकती है।
- (xi) वर्तमान मामले में, विभिन्न ग्रेडों का क्षमता में समान हिस्सा है। इसलिए समान वस्तु के लिए घरेलू उद्योग को हुई क्षति का आकलन समग्र रूप से करना उपयुक्त होगा। घरेलू उद्योग ने निर्यातकों के इस तर्क का खण्डन किया है कि प्रत्येक ग्रेड के लिए क्षति का विश्लेषण अलग से किया जाना चाहिए जो उपलब्ध नहीं है।

## च.2. निर्यातक/आयातक के विचार

36. निर्यातक/आयातक के विचारों को संक्षेप में नीचे दिया गया है;

- (i) उन्होंने यह अनुरोध किया है कि मर्क के उत्पाद की बिक्री कीमत हमेशा भारत में भारतीय उत्पादों से अधिक रही है। इससे यह प्रदर्शित होता है कि कीमत में ह्रास या कमी भारतीय उत्पादकों द्वारा की गई है और वे संपूर्ण बाजार में मंदी लाने के लिए उत्तरदायी हैं।
- (ii) जाँच अवधि के दौरान बिक्री, उत्पाद, बाजार हिस्से, निवेशों पर आय में सुधार का रूख प्रदर्शित हुआ है। निर्यातक ने यह दावा किया है कि भारतीय उद्योग को क्षति, यदि कोई हो, पाटन के कारण नहीं हुई है बल्कि यह क्षति आंतरिक कारणों और पाटन से इतर कारणों के कारण हुई है।
- (iii) यह अनुरोध किया गया है कि मै0 मर्क, भारत में व्यापारी के रूप में प्रचालन नहीं करते हैं बल्कि उनके पास भारत में ग्राहकों को प्रौद्योगिकी और उत्पाद अनुप्रयोगों के बारे में जानकारी देने के लिए उत्पाद विशेषज्ञों का एक दल है।
- (iv) घरेलू उद्योग ने वर्ष 2001-02 में एक अस्थायी विस्तार कार्यक्रम किया, जब बाजार में मंदी थी, और अब यह दावा कर रहे हैं कि पाटन के कारण उनकी वित्तीय स्थिति प्रभावित हुई है। घरेलू उद्योग ने वर्ष 2001-02 में महाड में स्थित संयंत्र की क्षमता में वृद्धि करने के लिए बड़ी मात्रा में पूँजी का निवेश किया है जो निर्यात अनुमानों पर विचार करते हुए साध्यता अध्ययन पर आधारित था और अब वे पाटन से प्रभावित रहने का दावा कर रहे हैं। अधिक निवेशों के परिणामस्वरूप अधिक उधारियाँ हुईं और इससे ब्याज लागतों का बोझ पड़ा जिससे उनकी वित्तीय स्थिति खराब, यदि कोई हो, हुई।
- (v) निर्यातक ने यह अनुरोध किया है कि वस्त्र छपाई उद्योग में मंदी होने के कारण लगभग 250 टन की माँग के समाप्त हो जाने के कारण घरेलू उद्योग पर प्रभाव पड़ा है। वस्त्र उद्योग की मंदी से अनेक मास्टर बैच के विनिर्माताओं और प्रिंटरों को उनके व्यवसाय बंद करने पर बाध्य होना पड़ा है। माँग में इस कमी को गलत ढंग से मर्क द्वारा पाटन के मात्रात्मक प्रभाव के रूप में बताया जा रहा है। कॉस्मेटिक उत्पादों की सर्वाधिक बिक्री वाले विक्रेताओं में से एक (हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड, कास्मेटिक ग्रेड पिगमेंट्स के एक प्रयोक्ता) ने वर्ष 2002-03 से पर्ल पिगमेंट्स के प्रयोगों को समाप्त करने निर्णय लिया था। इससे पिगमेंट्स व्यवसाय पर प्रभाव पड़ा होगा।

हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड द्वारा पर्ल कोर्टिंग को हटाने और वस्त्र उद्योग की मंदी ने घरेलू उद्योग पर 25% से अधिक का प्रतिकूल प्रभाव डाला है; जिसके परिणामस्वरूप 400 मी. टन प्रतिवर्ष की सीमा तक माँग की मात्रा में कमी हुई है।

- (vi) निर्यातक ने यह दावा किया है कि उनके द्वारा बेचे गए कॉस्मेटिक ग्रेड पिगमेंट्स उत्तम ग्रेड के हैं और इनका प्रयोग मै0 सुदर्शन कैमिकल्स इंडस्ट्रीज लिमि0 की तुलना में अधिक व्यापक अनुप्रयोगों में होता है। घरेलू उद्योग मर्क की तुलना में कॉस्मेटिक ग्रेड पिगमेंट्स के अंतर्गत समान उत्पाद का, उत्पादन नहीं करता है, जो कि घरेलू उद्योग की कीमत सूची से स्पष्ट है। यह नोट करना महत्वपूर्ण है कि कॉस्मेटिक ग्रेड पिगमेंट्स के प्रमुख प्रयोक्ता (मोदी, रेवलान, एवन) ने यह बताया है कि भारत में उपलब्ध कॉस्मेटिक ग्रेड पिगमेंट्स अपेक्षित मानकों को पूरा नहीं करते हैं और इस प्रकार वे कॉस्मेटिक अनुप्रयोगों के लिए मर्क ग्रेड पिगमेंट्स का उपयोग करते हैं।
- (vii) प्रकटन विवरण के संबंध में की गई टिप्पणियों में निम्नलिखित मुद्दे उठाए गए हैं,

- घरेलू बिक्रियों और निर्यात बिक्रियों की मात्रा में वृद्धि हुई है।
- क्षमता में वृद्धि और माँग में, मुख्यतः वस्त्र छापाई उद्योग और कास्मेटिक उद्योग द्वारा क्षमता की प्रवृत्ति में परिवर्तन के कारण, कमी के कारण क्षमता उपयोग में गिरावट आई है। अतिरिक्त क्षमता तथा अल्प संयंत्र उपयोग के परिणामस्वरूप स्थिर लागतों का अधिक बोझ पड़ा है।
- वृद्धि की उचित समझ और इसकी प्रवृत्ति के विश्लेषण के लिए क्षति विश्लेषण की अवधि जाँच से पहले तीन वर्षों की होनी चाहिए। घरेलू उद्योग एकमात्र उत्पादक हैं और वे क्षमता को बढ़ाकर और फाटनरोधी शुल्क की मदद से ऑटो और कास्मेटिक ग्रेड्स में घरेलू बाजार पर कब्जा करके अपनी एकाधिकारी स्थिति को और मजबूत बनाने का प्रयास कर रहे हैं।
- घरेलू कीमतों में कटौती की जाँच उस कीमत पर होनी चाहिए जिस पर मै0 मर्क अपने उत्पाद को स्वतंत्र क्रेताओं को बेचते हैं न कि आयातों के पहुंच मूल्य पर।
- क्षति रहित कीमत का निर्धारण बड़ी संख्या में विचाराधीन उत्पाद के ग्रेडों के लिए किया गया है। कम कीमत पर बिक्री क्षतिरहित कीमत और निवल बिक्री प्राप्तियों के बीच का अंतर होना चाहिए।
- निवेशों पर आय में कमी कंपनी द्वारा किए गए अतिरिक्त निवेशों के कारण हुई है।
- अप्रयुक्त क्षमता के कारण लाभ में गिरावट आई है।

**च. 3 प्राधिकारी द्वारा जांच****क्षति का संचयी आकलन**

37. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध - II (iii) के अनुसार जिन मामलों में एक से अधिक देशों से किसी उत्पाद के आयातों की एक साथ पाटनरोधी जांच की जानी हो वहां निर्दिष्ट प्राधिकारी इस प्रकार के आयातों के प्रभाव का एक साथ आकलन तब ही करेगा जब यह निश्चित हो जाए कि (क) प्रत्येक देश से हुए आयात से संबंधित पाटन मार्जिन निर्यात मूल्य के प्रतिशत के रूप में 2 प्रतिशत से अधिक है और प्रत्येक देश से आयात की मात्रा समान उत्पाद के आयात का 3 प्रतिशत है, तथा (ख) आयातित उत्पाद एवं समान घरेलू उत्पाद के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थिति के आलोक में आयातों के प्रभाव का एक साथ आकलन करना उचित हो। प्राधिकारी ने यह पाया है कि संबद्ध देशों के संबंध में पाटन का मार्जिन 2 प्रतिशत से अधिक है। इन संबद्ध देशों से सामूहिक रूप से होने वाले आयातों की मात्रा कुल आयातों के 95 प्रतिशत से अधिक है।

38. सूचना की जांच के पश्चात प्राधिकारी ने पाया कि संबद्ध देशों से आने वाली संबद्ध वस्तुओं की कीमत हमेशा तुलनीय होती है तथा इनमें कोई उल्लेखनीय अंतर नहीं होता है। इनका आयात समान टैरिफ वर्गीकरण के तहत किया जाता है। आयातित उत्पाद तथा घरेलू उत्पाद के लिए प्रयोक्ता उद्योग समान है। तथापि, प्राधिकारी ने आयातित उत्पादों के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों तथा आयातित उत्पादों तथा घरेलू समान उत्पाद के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों के आलोक में घरेलू रूप से उत्पादित समान उत्पाद पर संबद्ध वस्तुओं के आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन करना उचित समझा है। इस जांच में संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयातों से घरेलू उद्योग को हुई क्षति के प्रभाव की संचयी जांच उचित है।

39. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II में क्षति के निर्धारण हेतु सिद्धांतों के अनुसार, क्षति के निर्धारण में (क) पाटित आयातों की मात्रा तथा समान वस्तु के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव तथा (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामकारी प्रभाव, दोनों की उद्देश्यात्मक जांच शामिल होगी।<sup>10</sup>

घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II के पैरा (iv) में उल्लेख है कि,

"घरेलू उद्योग की चिंताओं पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में सभी संबद्ध आर्थिक कारकों का एक मूल्यांकन करना और उद्योग की स्थिति को प्रभावित करने वाले संकेतकों का मूल्यांकन करना शामिल होगा, इसमें बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश पर प्राप्ति या क्षमता उपयोग, कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकद प्रवाह, समान रोजगार, मजदूरी वृद्धि, पूंजीगत निवेश को बढ़ाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभाव शामिल है।"

**पाटित आयातों में मात्रा एवं बाजार हिस्सा**

40. जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से आयातों में समग्र रूप से वृद्धि हुई है। इसमें जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के उत्पादन एवं मांग की तुलना में भी वृद्धि हुई है। आयातों के बाजार हिस्से के संदर्भ में संबद्ध देशों का हिस्सा वर्ष 2000-2001 के दौरान 92.96 प्रतिशत से बढ़कर जांच अवधि के

दौरान 97.41 प्रतिशत हो गया है। अन्य देशों से आयातों के बाजार हिस्से में वर्ष 2000-2001 में 7.04 प्रतिशत से जांच अवधि के दौरान 2.59 प्रतिशत तक गिरावट आई है।

	2000-2001		2001-2002		जांच अवधि	
	मात्रा	मूल्य	मात्रा	मूल्य	मात्रा	मूल्य
	किग्रा.	रुपए	किग्रा०	रुपए	किग्रा०	रुपए
कुल आयातों में हिस्सा (%)						
ई यू	92.61		88.51		89.85	
यू एस ए	0.35		0.00		7.56	
संबद्ध देश	92.96		88.51		97.41	
अन्य देश	7.04		11.49		2.59	
कुल	100.00		100.0		100.00	

#### मांग में बाजार हिस्सा

41 उत्तर देने वाले निर्यातकों द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों के आधार पर आयात मात्रा पर विचार किया गया है, प्राधिकारी ने भी इसी के आधार पर मांग का मूल्यांकन किया है। यह नोट करना सुसंगत होगा कि किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने प्राधिकारी द्वारा मूल्यांकित मांग पर विवाद नहीं उठाया है तथा घरेलू उद्योग ने स्वयं 1000 मी.टन से 1200 मी.टन के इस क्षेत्र में मांग का मूल्यांकन किया है। मांग में घरेलू उद्योग के हिस्से की मात्रा में वर्ष 2000-2001 के दौरान 63.78 प्रतिशत से जांच अवधि के दौरान 57.86 प्रतिशत तक गिरावट आई है, जबकि पाटित आयातों के हिस्से की मांग वर्ष 2000-2001 में 33.67 प्रतिशत से बढ़कर जांच अवधि (वार्षिक) के दौरान 41.05 प्रतिशत हो गयी है। वर्ष 2000-2001 के दौरान मांग 784 मी.टन से बढ़कर जांच अवधि (वार्षिक) के दौरान 1100 मी.टन हो गयी है।

	2000-2001	2001-2002	जांच अवधि	जांच अवधि (वार्षिक)
आयात (मी.टन)				
ई सी	263	208	624.92	416.61
यू एस ए	1	-	52.6	35.07
संबद्ध देशों से आयात	264	208	677.52	451.68
अन्य देशों से आयात	20	27	18	12
कुल आयात	284	235	695.52	463.68
घरेलू बिक्री	500	638	955	637
मांग	784	873	1651	1100
मांग में हिस्सा (%)				
संबद्ध देश	33.67	23.83	41.05	41.05
अन्य देश	3	3	1	1
घरेलू उद्योग	63.78	73.08	57.86	57.86

### बिक्री में वास्तविक एवं संभावित गिरावट

42 घरेलू उद्योग की बिक्री, वर्ष 2000-2001 के दौरान 100 से बढ़कर जांच अवधि (वार्षिक) के दौरान 115.03 हो गयी है। उसी अवधि के दौरान निर्यात बिक्री 100 से बढ़कर 225.91 हो गयी है। घरेलू उद्योग की समग्र बिक्री में वर्ष 2000-2001 के दौरान 100 की तुलना में जांच अवधि के दौरान 124.34 की वृद्धि हुई है।

बिक्री	इकाई	2000-01	2001-2002	जांच अवधि	जांच अवधि (वार्षिक)
मात्रा					
सूचीबद्ध					
घरेलू बिक्री		100	128.01	172.55	115.03
निर्यात बिक्री		100	124.37	338.86	225.91
कुल		100	127.60	191	127.34

### उत्पादन एवं क्षमता उपयोग

43 घरेलू उद्योग की संस्थापित क्षमता, वर्ष 2000-2001 में 900 मी.टन से बढ़कर जांच अवधि (वार्षिक) के दौरान 1500 मी.टन हो गयी है। महाद में एक नई विनिर्माण इकाई की स्थापना से अतिरिक्त क्षमता में वृद्धि होने के कारण वर्ष 2002-2003 के दौरान घरेलू उद्योग की संस्थापित क्षमता में वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग का उत्पादन वर्ष 2000-2001 में 100 से बढ़कर जांच अवधि (वार्षिक) के दौरान 125 हो गया है। घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में वर्ष 2000-2001 के दौरान 100 की तुलना में जांच अवधि (वार्षिक) में मांग में वृद्धि होने की स्थिति में 75.17 की गिरावट आई है। घरेलू उद्योग ने अपनी संस्थापित क्षमता में 66.6 प्रतिशत की वृद्धि की है जबकि संबद्ध वस्तुओं की बढ़ती मांग की स्थिति में, उत्पादन में केवल 25 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

	इकाई	2000-01	2001-2002	जांच अवधि	जांच अवधि (वार्षिक)
सूचीबद्ध					
क्षमता उपयोग		100.00	133.81	75.17	75.17
उत्पादन		100	141	188	125

### वृद्धि

44 घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा वर्ष 2001-02 के दौरान 28.01 प्रतिशत से घटकर जांच अवधि (वार्षिक) के दौरान - 9.18 प्रतिशत हो गई है जबकि मूल्य के रूप में यह वर्ष 2001-02 के दौरान 35.26 प्रतिशत से घट कर जांच अवधि (वार्षिक) के दौरान - 8.93 प्रतिशत हो गई है। उसी अवधि के दौरान घरेलू उद्योग का उत्पादन वर्ष 2001-02 में 41.25 प्रतिशत से घटकर जांच अवधि (वार्षिक) के दौरान - 6.37 प्रतिशत हो गया है। समान स्थितियों में संबद्ध देशों का आयात हिस्सा 92.96 प्रतिशत से बढ़कर जांच अवधि (वार्षिक) के दौरान 97.41 प्रतिशत हो गया है। उपरोक्त से यह स्पष्ट है कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की वृद्धि में रुकावट आई है।



	इकाई	2000-01	2001-2002	जांच अवधि	जांच अवधि (वार्षिक)
घरेलू बिक्री (मात्रा)	%		28.01	36.23	-9.18
घरेलू बिक्री (मूल्य)	%		35.26	36.60	-8.93
उत्पादन	%		41.25	40.45	-6.37

### कीमत कटौती

45 निर्यातक द्वारा दिए गए तर्कों के संदर्भ में यह स्पष्ट किया गया है कि प्राधिकारी ने मै0 मर्क इंडिया की पुनर्बिक्री कीमत पर विचार किया है और सी आई एफ निर्यात कीमत का निर्धारण करने के लिए मर्क इंडिया द्वारा किए गए व्यय को घटा करके उल्टा परिकलन किया है। यह नोट किया गया है कि छूट तथा कमीशन, भाड़ा एवं परिवहन, कर एवं शुल्क को छोड़कर घरेलू उद्योग की निवल फैक्टरी द्वार बिक्री कीमत के साथ तुलना करने के लिए मर्क इंडिया की पुनर्बिक्री कीमत संगत नहीं है। प्राधिकारी ने मर्क की पुनर्बिक्री कीमत पर आधारित पहुँच मूल्य की तुलना घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति से की है। दोनों ग्रेडों, जो कुल आयातों के 90 प्रतिशत से अधिक हैं, के लिए कीमत कटौती का मूल्यांकन किया गया है और यह पाया गया है कि भारित औसत कटौती अत्यधिक है। जांच अवधि के दौरान कटौती का मार्जिन 9 प्रतिशत से 18 प्रतिशत के बीच था।

### कम कीमत पर बिक्री

46 कम कीमत पर बिक्री क्षति के आकलन का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। क्षति रहित कीमत का परिकलन किया गया है और कम कीमत पर बिक्री की सीमा का निर्धारण करने के लिए उसकी तुलना पहुँच मूल्य से की गयी है। जांच अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद के लिए उत्पादन लागत पर उचित रूप से विचार करके घरेलू उत्पादकों के लिए गैर क्षति कारक कीमत का मूल्यांकन किया गया है। अक्षमताओं को हटाने के लिए क्षमता उपयोग को मानकीकृत किया गया है।

47 विश्लेषण से यह प्रदर्शित होता है कि जाँच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु की परिकलित निर्यात कीमत पर आधारित भारित औसत पहुँच मूल्य घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित गैर क्षतिकारक कीमत से कम है। वर्तमान मामले में यह पाया गया है कि पाटित आयातों से अत्यधिक कीमत कटौती हुई है, आयातों से घरेलू उद्योग की कीमतों का ह्रास हो रहा है और यह कि पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग कम कीमत पर उत्पाद की बिक्री के लिए बाध्य हो रहा है। प्राधिकारी ने संबद्ध वस्तु की दोनों ग्रेडों के लिए कम कीमत पर बिक्री का निर्धारण किया है और यह पाया गया है कि संबद्ध देश से आयातों का भारित औसत पहुँच मूल्य घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित गैर क्षतिकारक कीमत से बहुत कम है। जांच अवधि के दौरान कम कीमत का मार्जिन 31 प्रतिशत से 42 प्रतिशत के बीच में रहा है।

### घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

48. प्राधिकारी ने नोट किया कि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत कच्चे माल की कीमत और संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु की कीमतों से जुड़ी हुई है। संबद्ध देशों की परिकलित निर्यात कीमत पर आधारित पहुँच मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों और उसके लिए निर्धारित गैर क्षतिकारक कीमत से कम है जिससे घरेलू उद्योग की कीमतें प्रभावित हो रही हैं। यह नोट किया गया है कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों

के कारण घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत का ह्रास हुआ है क्योंकि वह पाटित आयातों के पहुँच मूल्य के कारण अपनी बिक्री कीमत नहीं बढ़ा सका। यह भी देखा गया है कि संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत में वृद्धि हुई है जबकि घरेलू उद्योग के लिए संबद्ध वस्तु की बिक्री कीमत में गिरावट आई है जिसके परिणामस्वरूप पाटित आयातों के कारण कीमत ह्रास हुआ है।

### पाटन मार्जिन की मात्रा

49 यह नोट किया गया है कि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के पाटन की मात्रा अत्यधिक है। पाटन के निर्धारण के संबंध में प्राधिकारी ने भारत में स्वतंत्र क्रेताओं की तुलना में मै0 मर्क इंडिया की पुनर्बिक्री कीमत पर विचार किया है। चूंकि निर्यात कीमत का परिकलन कर लिया गया है, अतः मर्क जर्मनी की फैक्टरी द्वार प्राप्ति का निर्धारण करने के लिए मर्क इंडिया द्वारा किए गए सभी व्ययों पर विचार किया गया है।

### गँवाई हुई संविदाओं के साक्ष्य

50 घरेलू उद्योग ने संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों के कारण ऑर्डर अथवा संविदा के गँवाने का कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया।

### माल सूची

51 यह देखा गया है कि जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की माल सूची में सापेक्ष संख्या एवं मूल्य दोनों में वृद्धि हुई है। यह भी पाया गया है कि मासिक बिक्री मात्रा और मासिक बिक्री मूल्य दोनों के रूप में जांच अवधि की तुलना में जांच अवधि (वार्षिक) के दौरान माल सूची में वृद्धि हुई है।

	इकाई	2000-01	2001-2002	जांच अवधि	जांच अवधि (वार्षिक)
सूचीबद्ध					
मासिक बिक्रियों के रूप में माल सूची					
मात्रा		100	200.70	107.26	160.90
मूल्य		100	239.29	249.98	249.25

### निवेश पर आय और पूँजी उगाहने की क्षमता

52 घरेलू उद्योग के लिए लगाई गई पूँजी पर आय 2000-01 के दौरान 5.94 प्रतिशत से घटकर जांच अवधि (वार्षिक) के दौरान -4.33 प्रतिशत हो गई है। यह देखा गया है कि जिस उद्योग को 2000-01 के दौरान लगाई गई पूँजी पर सकारात्मक आय हो रही थी, जांच अवधि (वार्षिक) के दौरान उसकी आय में वृद्धि नकारात्मक रही है।

निवेश पर आय	इकाई	2000-01	2001-2002	जांच अवधि	जांच अवधि (वार्षिक)
लगाई गई पूँजी पर आय	%	5.94	5.77	-4.33	-4.33
सूचीबद्ध		100	92.22	-72.85	-72.85

**लाभप्रदता**

53. मांग में वृद्धि होने की स्थिति में जांच अवधि (वार्षिक) के दौरान घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में गिरावट आई है जबकि उसके उत्पादन में वृद्धि हुई है। उत्पादन लागत वर्ष 2000-01 के दौरान 100 से बढ़कर जांच अवधि (वार्षिक) के दौरान 113.15 हो गयी है जबकि बिक्री कीमत 2000-01 के दौरान 100 से घटकर जांच अवधि (वार्षिक) के दौरान 92.51 हो गयी है। यह देखा गया है कि उत्पादन लागत में वृद्धि हुई है जबकि उसी अवधि में उत्पाद की बिक्री कीमत में गिरावट आयी है और इसी कारण से उद्योग, जिसे आधार वर्ष में लाभ हो रहा था, उसे 2001-02 से घाटा हो रहा है।

रूपए/किग्रा०	2000-2001	2001-2002	जांच अवधि	जांच अवधि (वार्षिक)
सूचीबद्ध				
बिक्री कीमत	100	100.95	92.51	92.51
उत्पादन लागत	100	100.67	113.81	113.81
लाभ/हानि	100	-91.41	-775.45	-775.45

**रोजगार**

54. घरेलू उद्योग ने आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि (वार्षिक) के दौरान कर्मचारियों की संख्या में कमी करके और जांच अवधि के दौरान उत्पादन बढ़ा कर अपनी उत्पादकता में सुधार किया है। घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि उत्पादकता बढ़ाने और उन्हें हो रहे घाटे को कम करने के लिए कीमत कटौती उपाय के रूप में कर्मचारियों की संख्या में कमी की गयी है। यह नोट किया गया है कि रोजगार के स्तर में परिवर्तन होने से घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है।

कर्मचारी	इकाई	2000-01	2001-2002	जांच अवधि	जांच अवधि (वार्षिक)
सूचीबद्ध					
कर्मचारियों की संख्या		100	102.8	93.1	62
प्रति कर्मचारी उत्पादकता		100	141.25	125.29	125.29

**उत्पादकता**

55 प्रति कर्मचारी उत्पादन के रूप में परिलक्षित घरेलू उद्योग की उत्पादकता में जांच अवधि के दौरान सुधार हुआ है। इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि उत्पादकता में गिरावट के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई है।

उत्पादकता	इकाई	2000-01	2001-2002	2002-03	जांच अवधि (वार्षिक)
सूचीबद्ध					
कर्मचारियों की संख्या		100	102.8	93.1	62
प्रति कर्मचारी उत्पादकता		100	141.25	125.29	125.29

**मजदूरी एवं वेतन**

56 घरेलू उद्योग की प्रति कर्मचारी मजदूरी एवं वेतन जांच अवधि के दौरान बढ़ी है। यह वर्ष 2000-2001 के दौरान 100 से बढ़कर जांच अवधि (वार्षिक) में 106 हो गयी।

मजदूरी एवं वेतन	2000-01	2001-2002	जांच अवधि	जांच अवधि (वार्षिक)
सूचीबद्ध	100	87	106	106

**नकद प्रवाह**

57. घरेलू उद्योग एक बहु उत्पाद कंपनी है जो अन्य उत्पादों का भी उत्पादन करती है। घरेलू उद्योग का नकद प्रवाह समूची कंपनी से संबंधित प्रचालनों को प्रदर्शित करता है। तथापि, प्राधिकारी ने विचाराधीन उत्पाद से संबंधित नकद प्रवाह के रूप में घरेलू उद्योग के निष्पादन की जांच की। घरेलू उद्योग के विचाराधीन उत्पाद से संबंधित नकद लाभ निम्नानुसार हैं :

	2000-01	2001-2002	जांच अवधि	जांच अवधि (वार्षिक)
सूची	100	129.47	38.68	25.78

**क्षति संबंधी निष्कर्ष**

58 क्षति संबंधी मापदण्डों की जांच कर प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा उठाई गई क्षति संबंधी निम्नलिखित निष्कर्ष दिए हैं :

(क) संबद्ध देश से आयात निरपेक्ष रूप से काफी मात्रा में बढ़े हैं।

(ख) आयातों से घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों में भारी कटौती हो रही है।

(ग) घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में गिरावट आई है जिससे वित्तीय घाटा हो रहा है ।

(घ) याचिकाकर्ता कीमत न्यूनीकरण का सामना कर रहा है क्योंकि संबद्ध वस्तु की उत्पादन की लागत बढ़ी है जबकि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में गिरावट आई है तथा पाटित आयातों ने घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत को न्यूनीकृत किया है ।

(ङ) याचिकाकर्ता कम कीमत पर बिक्री का सामना कर रहा है क्योंकि संबद्ध वस्तु का पहुँच मूल्य घरेलू उद्योग की क्षतिरहित कीमत से कम है ।

(च) घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है—

#### कारणात्मक संबंध तथा अन्य कारक

59. प्राधिकारी ने कारणात्मक संबंध के मुद्दे के संबंध में हितबद्ध पार्टियों द्वारा किए गए अनुरोधों की जांच की है । प्राधिकारी द्वारा घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति तथा घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति एवं पाटित आयातों के बीच कारणात्मक संबंध से संबंधित मुद्दों के संबंध में विस्तृत जांच की गयी । पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II के पैराग्राफ (v) के अनुसार

"यह प्रदर्शित किया जाना चाहिए कि उपर्युक्त पैराग्राफ (ii) और (iv) में यथा निर्धारित पाटन के प्रभावों के जरिए पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को क्षति पहुँच रही है । पाटित आयातों और घरेलू उद्योग को क्षति के बीच कारणात्मक संबंध का प्रदर्शन निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष संगत साक्ष्य की जांच पर आधारित होगा । निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा पाटित आयातों से भिन्न ऐसे किसी ज्ञात कारक की भी जांच की जाएगी जो उसी समय घरेलू उद्योग को क्षति पहुँचा रहा है और इन अन्य कारकों से पहुँची क्षति हेतु पाटित आयातों को नहीं माना जाएगा । इस संबंध में जो कारक संगत हो सकते हैं उनमें अन्य के साथ-साथ पाटित कीमतों पर न बेचे गए आयातों की मात्रा एवं कीमत, मांग में कमी अथवा खपत की प्रवृत्तियों में परिवर्तन, विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों के बीच व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार एवं उनकी प्रयोज्यता, प्रौद्योगिकीय विकास तथा घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन एवं उत्पादकता शामिल होंगे ।"

60. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा संबद्ध वस्तु की बढ़ी हुई मांग में वर्ष 2000-01 के दौरान 63.78 प्रतिशत से घटकर जांच अवधि के दौरान 57.86 प्रतिशत (वार्षिक) हो गया है । कीमत प्रभाव की इस दृष्टि से जांच करने में कि क्या पाटित आयातों से भारत में समान उत्पाद की कीमत में भारी कटौती हुई है प्राधिकारी ने यह पाया है कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु का पहुँच मूल्य घरेलू उद्योग की निवल बिक्री कीमत से कम था जिससे घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में भारी कटौती हुई थी । इसके अलावा, घरेलू कीमत में कटौती से पाटित आयातों का पूरा प्रभाव प्रदर्शित नहीं होता है क्योंकि घरेलू कीमतें कम पहुँच मूल्य के कारण कम नहीं हुई थी । यह पाया गया है कि कीमत कटौती तथा आयातों के पहुँच मूल्य की कीमत निर्धारण से घरेलू उद्योग अपनी कीमतें उत्पादन लागत से भी कम करने के लिए बाध्य हुआ है । जिससे घरेलू उद्योग को वित्तीय घाटा हुआ है । घरेलू उद्योग पाटित आयातों के कारण उत्पादन लागत में वृद्धि के परिणामस्वरूप बिक्री कीमत नहीं बढ़ा सका और उसे जांच अवधि के दौरान वित्तीय घाटा हुआ । कीमत कटौती के साथ-साथ कीमत हास से वस्तुतः घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में कमी आई । यह नोट किया जाता है कि पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हो रही थी ।

61. अन्य स्रोतों से हुए आयात न्यूनतम सीमा से कम है और इस प्रकार अन्य देशों से हुए आयातों का घरेलू उद्योग पर न तो मात्रा संबंधी और न कीमत संबंधी प्रभाव पड़ा है । संबद्ध वस्तु की मांग में सुकारणात्मक वृद्धि हुई है । संबद्ध वस्तु की आकलित मांग संवर्धित उत्पादन में 2000-01 में 784 मी.टन

से बढ़कर जांच अवधि में 1100 मी.टन हो गयी है। इस प्रकार मांग में कमी ऐसा कोई संभावित कारण नहीं है जिससे घरेलू उद्योग की क्षति हुई हो। विचाराधीन उत्पाद के संबंध में खपत की पद्धति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। अतः खपत की पद्धति में परिवर्तनों को घरेलू उद्योग की क्षति का कारण नहीं माना जा सकता है।

62 संबद्ध वस्तु के निर्यातों में संबद्ध वस्तु के उत्पादन की तुलना में वृद्धि हुई है। निर्यातों में वृद्धि उत्पादन में हुई वृद्धि से अधिक है और घरेलू उद्योग निर्यातों में वृद्धि के कारण अपने उत्पादन को बनाए रखने में असमर्थ है जो अन्यथा जांच अवधि में काफी कम हो गया होता, यदि घरेलू उद्योग ने निर्यात नहीं किया होता। अतः निर्यात निष्पादन में संभावित कमी घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं है। ऐसा कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार नहीं है जिसे घरेलू उद्योग की क्षति का कारण माना जा सके। उत्पाद के उत्पादन संबंधी प्रौद्योगिकी में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है अतः प्रौद्योगिकी विकास क्षति का कारण नहीं है।

63 घरेलू उद्योग की उत्पादकता में वृद्धि हुई है। तथापि, उत्पादकता में वृद्धि के बावजूद आवेदक को अपेक्षाकृत अधिक वित्तीय घाटा हुआ है। यह देखा गया है कि उत्पादकता के कम स्तर पर भी आवेदक आधार वर्ष में लाभ कमा रहा था जबकि उत्पादकता के उच्च स्तर तक आवेदक को वित्तीय घाटा हो रहा है।

64 निर्यातकों ने तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग को अन्य कारकों से क्षति हुई होगी। उन्होंने आगे यह कहा है कि घरेलू उद्योग कृषि प्रभाग में वित्तीय घाटा उठा रहा है। घरेलू उद्योग ने यह कहते हुए निर्यातकों के तर्कों का खण्डन किया कि वे विचाराधीन उत्पाद के संबंध में पृथक लेखा सूचना रखते हैं। प्राधिकारी ने हितबद्ध पार्टियों के तर्कों की जांच की और यह पाया कि घरेलू उद्योग ने विचाराधीन उत्पाद के लिए सूचना प्रस्तुत की है और जांच परिणाम संबद्ध वस्तु के लिए घरेलू उद्योग के सत्यापित आंकड़ों के आधार पर निकाले गए हैं जहां तक निर्यातक के इस तर्क का संबंध है कि घरेलू उद्योग को मांग में कमी के कारण क्षति हो रही है, प्राधिकारी ने जांच कर यह पाया है कि घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा में संवर्धित मांग के परिदृश्य में वस्तुतः वृद्धि हुई है। अतः निर्यातकों के तर्क के अनुसार इन क्षेत्रों में बिक्री मात्रा घरेलू उद्योग की क्षति का संभावित कारण नहीं है।

65 घरेलू उद्योग ने प्रकटन विवरण पर अपनी टिप्पणियों में यह अनुरोध किया है कि उत्पादन से संबद्ध लागत और ऐसे उत्पादों की बिक्री पर विचार किए बिना घरेलू उद्योग के लिए आकलित क्षति रहित कीमत अत्यधिक अपर्याप्त है। मै0 मर्क ने यह तर्क दिया है कि क्षतिरहित कीमत की गणना की पद्धति का खुलासा नहीं किया गया है। उन्होंने यह भी कहा है कि विचाराधीन उत्पाद की मूल्य ह्रास, ब्याज लागत, विचाराधीन परिसम्पत्तियां और क्षमता बढ़ाने के लिए अव्यावहारिक निवेश योजनाएं, उच्च निविष्टि, विनिर्माण लागत और उत्पाद की तदनुसूची क्षति रहित कीमत के लिए प्रमुख कारण होगी। तथापि, यह स्पष्ट किया जाता है कि प्राधिकारी ने ब्याज, मूल्य ह्रास एवं विचाराधीन परिसंपत्तियों के कारण संभावित अन्य लागत के संबंध में मर्क के विस्तृत अनुरोधों पर ध्यान दिया था। निर्यातक के तर्क को ध्यान में रखते हुए यह नोट किया जाता है कि क्षति रहित कीमत का निर्धारण संबद्ध वस्तु के उत्पादन में प्रयुक्त कच्ची सामग्री की लागत, उसकी खपत, उपयोगिता लागत, ब्याज लागत, श्रम लागत, मूल्य ह्रास लागत और बिक्री एवं वितरण व्यय तथा निवेश लागत सहित सभी संगत कारकों को ध्यान में रखकर किया जाता है। यह भी नोट किया जाता है कि उत्पाद की क्षति रहित कीमत का निर्धारण क्षमता उपयोग के मानकीकृत स्तर पर किया गया है।

66. निर्यातक ने यह अनुरोध किया है कि घरेलू उद्योग का संयंत्र उपयोग जांच अवधि के दौरान कम रहा है। घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि जांच अवधि महाड संयंत्र के वाणिज्यिक उत्पादन का पहला पूरा वर्ष है और संबद्ध वस्तुओं के लिए कंपनी का क्षमता उपयोग पिछले वर्षों की तुलना में कम रहा है। इस मुद्दे की सत्यापन के दौरान जांच की गयी थी। जांच में यह प्रदर्शित हुआ है कि उत्पादन क्षमता में 2001-2002 और जांच अवधि के दौरान वृद्धि हुई है। यह पाया गया है कि कंपनी ने वर्ष 2001-2002 में 74 प्रतिशत का क्षमता उपयोग प्राप्त किया है और बढ़ती हुई मांग के परिदृश्य और संबद्ध वस्तुओं के लिए निर्यात क्षमता के मद्देनजर अतिरिक्त क्षमता का सृजन किया गया है। घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि इस उत्पाद में पेट्रो रसायन जैसे उद्योगों के लिए उच्च उपयोगिता स्तर संभव नहीं है, विशेष रूप से जब संबद्ध माल के विभिन्न ग्रेडों को बड़ी संख्या में उत्पादित किया जाना हो। कम क्षमता उपयोग का प्रभाव उत्पादन की प्रति यूनिट ऊपरी लागत के अपेक्षाकृत अधिक प्रभाव के रूप में महसूस किया गया होता और इससे घरेलू उद्योग का वित्तीय घाटा प्रभावित हो सकता है। यह भी नोट किया जाता है कि अन्य कारणों के कारण लागत और अदक्षता के उच्च प्रभाव को नकारने के लिए क्षमता उपयोग को मानकीकृत किया गया है। इस उत्पाद के लिए क्षतिरहित कीमत का निर्धारण क्षमता उपयोग के मानकीकृत स्तर पर किया गया है और यह पाया गया कि घरेलू उद्योग को पाटित आयातों के परिणामस्वरूप क्षति हुई। यह भी देखा गया है कि पाटित आयातों से घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित क्षतिरहित कीमत तब भी कम हो जाती है जब घरेलू उद्योग के मानकीकृत क्षमता उपयोग को क्षति रहित कीमत के निर्धारण के लिए लिया गया है। इस प्रकार यह नोट किया जाता है कि नियत लागत और क्षति (स्व आरोपित) के रूप में कम क्षमता उपयोग के प्रभाव को इस कारण अलग कर दिया गया है।

67. घरेलू उद्योग ने अनुरोध किया है कि प्राधिकारी ने पाटन मार्जिन के प्रयोजनार्थ निर्यात कीमत परिकलित की है, इसलिए परिवर्तनीय शुल्कों या यथा मूल्य शुल्कों के रूप में पाटनरोधी शुल्क उचित नहीं होगा। उन्होंने आगे यह तर्क दिया है कि एक ऐसी स्थिति में जहां निर्यात कीमत का परिकलन पाटन और क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ किया गया है, एक संदर्भ कीमत और यथा मूल्य शुल्क ऐसी स्थिति में वांछनीय नहीं है जब निर्यात कीमत ही अविश्वसनीय पायी गयी है जिससे घरेलू उद्योग को हुई क्षति का समाधान नहीं होगा। चूंकि औद्योगिक खंड के अंतर्गत बड़ी संख्या में ग्रेडें हैं जिनकी कीमतों में अंतर है, इसलिए एक एकल बेंचमार्क संदर्भ कीमत उचित नहीं होगी। इस स्थिति में घरेलू उद्योग ने अनुरोध किया है कि एक नियत शुल्क पर विचार किया जाए। निर्यातकों ने यह तर्क दिया है कि विचाराधीन उत्पाद के लिए संदर्भ कीमत के रूप में परिवर्तनीय शुल्क पर विचार किया जा सकता है। प्राधिकारी ने इस जांच में विचार किए जाने वाले शुल्क के स्वरूप के बारे में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए तर्कों की जांच की। यह नोट किया जाता है कि विभिन्न प्रकार के शुल्कों का मामले-दर-मामले आधार पर भिन्न-भिन्न निहितार्थ होता है। तथापि, इस मामले में चूंकि विचाराधीन उत्पाद में कॉस्मेटिक और ऑटोमैटिव ग्रेडें जिनकी कीमतें परिवर्तनीय हैं, को छोड़कर माइका पर्ल रंजक की विभिन्न ग्रेडें हैं इसलिए विचाराधीन उत्पाद के लिए नियत शुल्क की सिफारिश करना उचित समझा गया है।

### भारतीय उद्योग का हित एवं अन्य मुद्दे

68. प्राधिकारी मानते हैं कि सामान्य तौर पर पाटनरोधी शुल्क लगाने का उद्देश्य पाटन की अनुचित व्यापार प्रथाओं द्वारा घरेलू उद्योग को हुई क्षति को दूर करना है ताकि खुली एवं उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति को पुनः बहाल किया जा सके।

69. प्राधिकारी यह भी मानते हैं कि यद्यपि पाटनरोधी शुल्क लगाने से संबद्ध वस्तु के प्रयोग से विनिर्मित उत्पादों के कीमत स्तर प्रभावित हो सकते हैं और परिणामस्वरूप इन उत्पादों की तुलनात्मक प्रतिस्पर्धा पर कुछ प्रभाव पड़ सकता है तथापि, इन पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा कम नहीं होगी। इसके विपरीत, पाटनरोधी उपायों को लागू करने से पाटन प्रथाओं के द्वारा

प्राप्त हुए अनुचित लाभ समाप्त होंगे और घरेलू उद्योग का ह्रास रुकेगा और उपभोक्ताओं के लिए व्यापक विकल्प उपलब्ध रखने में मदद मिलेगी ।

### पहुँच मूल्य

70 इस उद्देश्य के लिए आयातों का पहुँच मूल्य सीमाशुल्क टैरिफ, अधिनियम, 1975 की धारा 3, 3 क, 8 ख, 9, 9 क के अंतर्गत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सीमाशुल्क विभाग द्वारा सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1962 और सीमाशुल्कों के स्वीकार्य स्तर के अंतर्गत यथानिर्धारित आकलन योग्य मूल्य होगा ।

### निष्कर्ष

71 पूर्वोक्त पर विचार करने के पश्चात प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि:

(क) संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं का भारत को निर्यात इनके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है ।

(ख) घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है ।

(ग) घरेलू उद्योग को क्षति संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के पाटन के कारण हुई है ।

(घ) इसलिए प्राधिकारी संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित अध्याय 32 के अंतर्गत आने वाली संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश करना आवश्यक समझते हैं ।

72 तदनुसार, प्राधिकारी सिफारिश करते हैं कि संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के सभी आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाया जाए । पाटनरोधी शुल्क संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 32 के अंतर्गत आने वाली संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर केन्द्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से निम्नलिखित तालिका के कॉलम 9 में उल्लिखित राशि होगी ।

क्र. सं.	उप शीर्ष	माल का विवरण	विनिर्देशन	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	राशि	माप की इकाई	मुद्रा
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
1	32	कॉस्मेटिक और ऑटोमेटिक ग्रेड को छोड़कर माइका पर्ल रंजक		ई यू	ई यू	मै0 मर्क, जर्मनी	मै0 मर्क, जर्मनी	1. 25	किग्रा10	यू एस डालर
2	32	कॉस्मेटिक और ऑटोमेटिक ग्रेड को छोड़कर माइका पर्ल रंजक		ई यू	ई यू	मै0 मर्क, जर्मनी	कोई निर्यातक	1. 25	किग्रा10	यू एस डालर
3	32	कॉस्मेटिक और ऑटोमेटिक ग्रेड को छोड़कर माइका पर्ल रंजक		ई यू	कोई देश	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	1. 25	किग्रा10	यू एस डालर
4	32	कॉस्मेटिक और ऑटोमेटिक ग्रेड को छोड़कर माइका पर्ल रंजक		यू एस ए	यू एस ए	मै0 मर्क, यू एस ए	मै0 मर्क, यू एस ए	2. 27	किग्रा10	यू एस डालर



5	32	कॉस्मेटिक और ऑटोमेटिक ग्रेड को छोड़कर माइका पर्ल रंजक		यू एस ए	यू एस ए	मै0 मर्क, यू एस ए	कोई निर्यातक	2.27	किग्रा0	यू एस डालर
6	32	कॉस्मेटिक और ऑटोमेटिक ग्रेड को छोड़कर माइका पर्ल रंजक		यू एस ए	कोई देश	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	2.27	किग्रा0	यू एस डालर

7.3 इस आदेश के विरुद्ध कोई अपील 1995 में यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम और सीमा टैरिफ नियमों, 1995 के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क एवं सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष की जाएगी।

क्रिस्टी फेर्नान्डेज, निर्दिष्ट प्राधिकारी

## MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

### NOTIFICATION

New Delhi, the 22nd December, 2004

### FINAL FINDINGS

**Subject : Anti-dumping investigation concerning import of Mica pearl pigment originating in or exported from China PR, Japan, USA and EU.**

No. 14/22/2003-DGAD.— Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof;

#### A. PROCEDURE

1. The Procedure described below has been followed:

(i) The Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), received an application filed by M/s Sudarshan Chemicals Industries Ltd. (hereinafter referred to as SCIL) on behalf of the domestic industry, alleging dumping of Mica Pearl Pigment originating in or exported from China PR, Japan, USA and EU (hereinafter referred to as subject countries).

(ii) Preliminary scrutiny of the application filed by the applicant revealed certain deficiencies, which were subsequently rectified by applicant. The application was, therefore, considered as properly documented.

(iii) The Authority on the basis of prima-facie evidence submitted by the applicant considered to initiate the investigation against imports of subject goods from subject countries/ territories. The Authority notified the embassies/representatives of subject countries in New Delhi about the receipt of the dumping allegation before proceeding to initiate the investigation in accordance with Sub-Rule 5(5) of the AD Rules.

(iv) The Authority forwarded a copy of the public notice of initiation to all the known exporters, importers and industry/user associations (whose details were made available by applicant) providing them an opportunity to make their views known in writing in accordance with the Rule 6(2), 6(3) and 6(4) respectively. The Authority

also forwarded copies of MET (Market Economy Treatment) questionnaire to known Chinese exporters as per Annexure-I of AD Rules.

(v) The Authority made available the public file as per Rule 6(7) to all interested parties containing non-confidential version submitted by interested parties for inspection, upon request.

(vi) The Authority made a request to the Central Board of Excise and Customs (CBEC) and Director General Commercial Intelligence & Statistics (DGCI&S), Kolkata to arrange details of imports of the subject goods during past three years, including the period of investigation.

(vii) The Authority held an oral hearing on 29/4/2004 to hear the interested parties, which was attended by representatives of the interested parties. The parties attending the public hearing were requested to file written submissions of views expressed orally. Designated Authority considered these submissions as such received from interested parties in these findings.

(viii) Cost investigations were conducted to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) on the information furnished by the applicant.

(ix) The Authority verified the information provided by the domestic industry to the extent considered necessary.

(x) The Authority also verified the information provided by the importer to the extent considered necessary.

(xi) The Authority conducted on-spot verification at the premises of the cooperative exporters from China PR and EU.

(xii) In accordance with Rule 16 of the anti dumping Rules supra, the essential facts considered for these findings were disclosed on dated 30<sup>th</sup> November, 2004 to known interested parties and provided time upto 12<sup>th</sup> December 2004 to file their comments. Comments received on the same have also been duly considered in these findings.

(xiii) The Authority considered the period of investigation (POI) of eighteen months from 1<sup>st</sup> April 2002 to 30<sup>th</sup> September 2003 and injury analysis was carried out for the periods 2000-2001 and 2001-2002 along with the dumping period of investigation i.e., April, 2002- September, 2003.

(xiv) \*\*\*\* in the Notification represents information furnished by interested parties on confidential basis and so considered by Authority under the AD Rules.

## **B. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE:**

2. In the initiation notification the product was considered and described as "certain inorganic pigments/colouring agents giving lustrous/shinning/frosted effects, such pearl scent effects, metallic effects, commercially known in the market place as

Titanium Dioxide or Iron Oxide coated Mica Pearl Pigment or Pearl Luster Pigments or Pearl Pigment". During the course of investigation the issue regarding the product under consideration has been raised by the exporter and importer and requested for exclusion of automotive and cosmetic grades of Mica Pearl Pigment. Mica Pearl Pigment is manufactured and used for three applications mainly automotive, cosmetic and industrial applications. Mica pearl pigments are available in three grades;

- a) industrial grade used for textile printing, plastic industries and many more industrial applications,
- b) cosmetic grade used in colour cosmetics and toiletries, and
- c) automotive grade used for manufacture of automotive paint and other paints.

3. The exporter has submitted that automotive grade Mica Pearl Pigment has neither been produced nor sold by M/s Sudarshan Chemicals Industries Ltd during the POI. They have further submitted that the florida test certification, which is mandatory for commercial production of automotive grade, was not available with the domestic industry during the POI. Hence, automotive grade needs to be excluded from the product under consideration in this anti dumping investigation. They have also argued that they sell various grade/shades of cosmetic pigments for various cosmetic applications. The domestic industry does not have the range that Merck offers and it is important to note that the price of Merck products is higher than the domestic industry. They offer the same quality as sold in their domestic market whereas the domestic industry sells industrial grade pigments as cosmetic grade in the domestic market. Since they have not produced the cosmetic grade, the same may be excluded from the product under consideration in this investigation.

4. Domestic industry has rebutted the argument of the exporter and stated that it is incorrect to say that they are not capable of producing automotive grade Mica Pearl Pigment. The domestic industry has already successfully completed trial production of auto grade pigment. Since "Florida Test" is required to be performed before the commercial trading, the domestic industry is at present conducting this test.

5. The arguments of the interested parties were examined and found that automotive grade Mica Pearl Pigment could be sold only if the product has undergone through a specialised test called florida test, which requires the product to be tested for a certain minimum period. During the course of domestic verification, the applicant has stated that florida test has not been completed of its automotive grade. They have further stated that florida test is an essential requirement for commercial selling of the product even if the automotive grades are produced.

6. The argument of the exporter regarding exclusion of cosmetic grade Mica Pearl Pigment was examined and found that the domestic industry is producing the product for the cosmetic application and selling in the market at a different price than the Merck. The exporters have argued that the quality produced by the domestic industry is inferior and cannot be used for the cosmetic applications, whereas Merck products are being sold to reputed cosmetic and toiletries industries. In support of their argument they have enclosed evidence for its exclusion. The argument of the exporter was examined in the light of prevailing price structure of the cosmetic grades imported into India and the domestically produced subject goods. During the course of verification of M/s Merck, Germany and M/s Merck, India, it was found from their records that Mica Pearl Pigments for cosmetic application are imported into India at

much higher prices and catering different market segments. The selling price of cosmetic grade for the domestic industry was verified and found that Mica Pearl Pigment for the cosmetic application is sold at much lower prices than the average landed value of imports for this grade.

7. M/s. Merck in their comments to the disclosure statement has stated that the Authority has rightly restricted the scope of product under consideration by excluding cosmetic and automotive grades of mica pearl pigment. They have further stated that it may also be ensured that the cosmetic and automotive grades are not inadvertently included in the list of imports attracting anti-dumping duty. The domestic industry has submitted in the comments to the disclosure statement that it would be extremely difficult for customs to distinguish the difference between automotive, cosmetic and industrial grades. The Designated Authority has differentiated the industrial and cosmetic grade on the basis of prices. Hence the domestic industry suggested that minimum import price of cosmetic grade may kindly be notified as benchmark price to avoid clearance of imports under industrial grade. The Authority examined the concerns of the interested parties and considered for notifying the duty for the product under consideration i.e., Mica Pearl Pigment excluding cosmetic and automotive grades.

8. In view of this the Authority holds that Mica Pearl Pigment for automotive and cosmetic applications are required to be excluded from the scope of the product under consideration. Hence, the product under consideration in this investigation is Mica Pearl Pigment excluding automotive and cosmetic grades. The product under consideration in the present application is "certain inorganic pigments/colouring agents giving lustrous/shinning/frosted effects, such pearl scent effects, metallic effects, commercially known in the market place as Titanium Dioxide or Iron Oxide coated Mica pearl pigment or Pearl Luster Pigments or Pearl Pigment excluding automotive and cosmetic grades". It is a colouring agent, which gives pearl scent effect. Inorganic pigments have metal compounds which include Cadmium Sulfite Pigments, such as Lead Carbonate Pearls, Titanium Dioxide or Iron Oxides Pearl Mica Pigments. Pearl pigments are used as pigments for decorative purposes to bring in special pearl scent or lustrous effect on the product. It is possible for any producer to supply pigments with different particle size. Similarly, it is feasible for a producer to supply tailor made pigments to suit specific end consumer requirement. Costs and prices vary with mean size and colour of the pigment. Mica pearl pigments are classified under Chapter 32 of the Customs Tariff Act, 1975.

9. There was no difference found between the subject goods manufactured by the domestic industry and the imported product from subject countries. The subject goods produced by the applicant are commercially and technically substitutable to the imported product and hence conditions of like article are satisfied. The Authority found that the domestic subject goods is similar to the imported product based on the information received from the exporters. The Authority, therefore, held that the goods produced by the domestic industry and those exported from the subject countries are like article within the meaning of the rules 2(d) of AD Rules.

### **C. DOMESTIC INDUSTRY**

10. The application has been filed by M/s. Sudarshan Chemicals Industries Ltd. on behalf of the domestic industry. It is a multi product company and is involved in

production of number of products. The applicant has not imported the subject goods in the past three years and exporting the subject goods to number of countries.

11. It is submitted by the exporter that the applicant has furnished information only for one of the item of industrial grade of Mica Pearl Pigments, i.e., 4179; and the normal value, export price and dumping margin has been calculated for all the grades taking the unit price of the item code of 4179 of industrial grade Mica Pearl Pigments. The domestic industry has intentionally defined the product in the widest possible way so as to block the imports of all the grades which are not even manufactured by them. Thus, the applicant lacks standing to file the present application in respect of all the grades of the Mica pearl pigments.

12. The Authority examined the argument of the interested parties and notes that the applicant has provided the costing / financial information of the subject goods along with the costing/financial information for the equivalent grades of imports, to establish the claim of domestic industry. The applicant company is the sole manufacturer of subject goods under investigation and they represent the 100% domestic production of the subject goods. The Authority, therefore, held that M/s. Sudarshan Chemicals Industries Ltd. represents the domestic industry within the meaning of Rule 2(b) of AD Rules.

#### **D. OTHER ISSUES**

##### **D.1 SUBMISSION OF NON-CONFIDENTIAL INFORMATION**

13. The domestic industry has submitted that the exporter has resorted to excessive use of confidentiality. The information provided by the exporter on non-confidential basis does not permit any understanding of the substance of information provided on confidential basis. They have further stated that entire submissions have been filed by the exporters with complete disregard to the requirement of non-confidential version. The exporters have also argued that the application does not provide adequate summary of non-confidential version enabling the exporters to effectively and meaningfully defend their interest thereby violating Article 6.5.1 of the WTO Anti-dumping Agreement.

14. Both the domestic industry and exporters have argued that the non-confidential version of their respective responses were inadequate and number of informations / data were kept confidential. The interested parties once again in the comments to the disclosure statement have raised that confidentiality have been maintained with disregard to providing meaningful non-confidential summaries of their confidential submissions. The arguments of the interested parties were examined and it is noted that the non-confidential responses provided by the interested parties were kept in the public file and were made available to all the interested parties. The number of information concerning prices and costing of their submissions was kept confidential by respective interested parties and these were treated as confidential by the Authority.

##### **D.2 INADEQUATE AND INACCURATE INFORMATION**

15. The exporter has stated that no uniform unit or basis has been adopted by the applicant for calculating export price, normal value, dumping margin and injury

analysis. They have further stated that the applicant has selectively chosen data from various sources for establishing a prima-facie case for initiation of the present anti dumping investigation against subject countries. Even the data from DGCI&S, IBIS and Chemical Trade Intelligence has been selectively utilized to mislead the Authorities. The present application suffers from insufficiency of disclosure, concealment of material facts and various legal infirmities.

16. The domestic industry has submitted that entire submissions made by these interested parties with regard to adequacy and accuracy are misplaced and untenable on both facts and law. The interested parties have referred to Panel Report in Guatemala Cement case selectively and without bringing the full facts and circumstances of that case.

17. M/s. Merck, in the comments to the disclosure statement has submitted that the Authority has not considered the import statistics of the DGCI&S. They have relied upon the data provided by domestic industry from the secondary sources and some import data and methodology of segregating of import data of dumped imports from total imports have not been indicated. They have also stated that the exclusion of Japan from this investigation is justified whereas exclusion of China PR is not appropriate as the petitioner is suffering injury due to dumped imports. The Authority examined and found that the import volumes on China PR is de-minimis and imports from Japan is not the subject goods under consideration. It is noted that the Authority has assessed the import volume on the basis of assessment of demand and import details made available from different sources. For the purpose of this investigation undumped imports have been segregated and only dumped imports have been considered for injury analysis

18. The Authority has examined these arguments and found that DGCI&S data on imports of Mica Pearl Pigment is not dedicated as number of other inorganic pigments are also reflecting under the same heading. The information based on secondary sources was also not complete as it has not captured the import of Mica Pearl Pigment from all the Customs ports. Therefore, complete reliance either on the DGCI&S data or on the secondary sources could not be appropriate. The domestic industry has stated that the demand of this product is ranging between 1000 to 1200 MT during the POI whereas the statistical import data from DGCI&S is showing imports of more 17000 MT. In this situation, it was found appropriate to assess imports on conservative assessment of demand and information made available from different sources including the import volumes from the responding exporters for the purpose of this investigation.

## **E. METHODOLOGY FOR CALCULATION OF DUMPING MARGIN**

### **E.1. VIEWS OF THE DOMESTIC INDUSTRY**

19. The views of domestic industry have been summarised below;

(i) M/s. Merck has responded in respect of its exports from USA, Japan and Europe. Non confidential version of the responses filed by the exporter are grossly incomplete that the same permit no understanding of the substance of information filed by the exporters on confidential basis.

(ii) There is no information with regard to affiliations between the various companies contained in the submissions. The domestic industry understands that there exists a compensatory arrangements between the exporters having plants in different countries and the corporate headquarter of Merck.

(iii) The dumping margin may be determined for the product under consideration on the basis of determination for the grade representing a significant proportion of the imports of the product under consideration. At the same time, applicant provided information with regard to imports in respect of all the grades imported in India.

(iv) The Authority has correctly constructed export price on the basis of price at which the imported product were first resold to independent buyers as per the provisions of AD Agreement and Indian AD Rules. It may be feasible for M/s. Merck, Germany to sell the material at any price to M/s. Merck, India on the policy of booking higher profits in any of their affiliates throughout the world.

## **E.2 VIEWS OF THE EXPORTER**

20. The exporter has submitted that buyer in India is not particular to the specific shade of the pigment that they procure as compared to buyers abroad,. This results in non-selling of specific graded pigments in Europe due to shade variations (off-spec industrial pigments), but the same is accepted easily in India. Hence, the selling prices for these "off-spec" industrial pigments are lower in the Indian market compared to the local market for Merck.

## **E.3 EXAMINATION BY THE AUTHORITY**

21. The Authority sent a copy of the questionnaire to all the known exporters for the purpose of determination of normal value in accordance with Section 9A (1)(c). Responses have been received from the following producer/exporters;

- i) M/s EMD, USA
- ii) M/s Merck, Japan
- iii) M/s Merck, Germany, and
- iv) M/s Taizu Group Co. Ltd.

22. M/s BASF, Germany has stated vide its letter dated 27<sup>th</sup> January, 2004 that they have decided not to file the exporters questionnaire as the volume of imports are too small. The Authority has considered M/s BASF, Germany as non-cooperative.

23. The exporter has argued that they have exported off speck material to India which are not sold in their domestic markets. The Authority notes that the grade exported by the exporter in the Indian market is the grade sold by the exporter in its home market, with the only alleged difference of quality. It is also noted that there could be a possible difference between the exported product and domestic product, the same could have at best called for a possible price adjustment under Article 2.4, for which the exporter has failed to provide quantifiable and verifiable information. It is noted that any price adjustment under Article 2.4 is not automatic, the same has to be claimed on the basis of quantifiable and verifiable data/information.

24. The share of imports from China PR is 2.59% in the total imports of the subject goods. The imports volume is de-minimis from China PR as it is less than 3% in the total imports of Mica Pearl Pigment. Therefore, China PR has been excluded from the subject countries in this investigation and their volume of imports has been segregated from dumped imports for the purpose of injury examination.

25. M/s. Merck, Japan did not file the response in the form and manner required to be submitted. They did not file information on cost of production for the exports to India, domestic sales and exports to third countries. They have only given statement regarding their exports to India which contains the details of grade wise of imports of Mica Pearl Pigment. It is found that they have exported only automotive grade of Mica Pearl Pigment which has been excluded from the product under consideration. Therefore, Japan has been excluded from the subject countries as imports of automotive grade of Mica Pearl Pigment do not constitute the subject goods for this investigation. The volume of imports from Japan has been segregated from dumped imports for the purpose of injury examination.

26. In view of the above, China PR and Japan have been excluded from the subject countries in this investigation. Henceforth, only EU and USA shall constitute as subject countries in this investigation wherever it is referred.

#### USA

##### NORMAL VALUE

27. M/s EMD, USA did not file the complete submission in the exporter questionnaire. They did not provide information regarding the cost of production of exports, domestic sales and exports to third countries. They also did not file information regarding the domestic sales in their home market during the period of investigation. Therefore, M/s. EMD, USA has been treated as non-cooperative exporter. Since none of the exporters/producers from USA has fully cooperated, the normal value has been constructed as US\$ \*\*\*\*/Kg for all producers/exporters from USA as per rule 6(8) of AD Rules.

##### EXPORT PRICE

28. The exporter has filed the information regarding the exports of subject goods into India during the POI. The export price claimed by the exporter has been considered and adjustments claimed by the domestic industry have been allowed to arrive at the ex-factory export price. The ex-factory export price is determined as US\$ \*\*\*\*/Kg for all exporters/producers from USA.

#### EUROPEAN UNION

##### NORMAL VALUE

29. M/s. Merck, Germany has filed response in the exporters' questionnaire. They have filed information with regard to mainly two grades of industrial Mica Pearl Pigments namely iriodin 100, iriodin 111 which constitutes 92% of the total exports of subject goods to India and the domestic industry has also considered these facts and provided costing/financial information respectively for the comparable grades



produced by them. During the course of verification the domestic sales were verified from their record. The cost of production of the subject goods was verified from their records and it was also reconciled from the profit and loss account for the period of investigation. The domestic selling price was found to be in the ordinary course of trade. The normal value has been determined for both the grades separately on the basis of domestic sales and arrived at the weighted average normal value for the subject goods. In view of the above, normal value has been determined as US\$\*\*\*\*/Kg.

### **EXPORT PRICE**

30. The exporter has provided invoice wise details of exports of subject goods made to India for both the industrial grades of Mica Pearl Pigment i.e, iriodin 100 and iriodin 111 during the period of investigation. M/s. Merck, Germany was exporting directly to their affiliate M/s. Merck, India. The export price was found to be unreliable as it was exported to their affiliate. In this situation export price has been constructed on the basis of the price at which the imported products are first resold to independent buyers. The adjustments with regard to M/s. Merck India to the independent buyers and M/s. Merck India to M/s. Merck Germany have been verified. The adjustments with regard to their claim have been considered on the basis of verified data to arrive at ex-factory export price to India for both the grades iriodin 100 and iriodin 111 separately during the period of investigation. The ex-factory export price for the subject goods is determined as US\$ \*\*\*\*/Kg.

31. The dumping margin has been determined for both the grades separately and then the weighted average dumping margin for the subject goods was arrived.

### **OTHER EXPORTERS/PRODUCERS FROM EU:**

#### **NORMAL VALUE:**

32. It is noted that none of the other exporters/producers from EU have responded. Since there were no other responding exporters/producers from EU, the normal value for all other exporters/producers has been constructed on facts available as per Rule 6(8) of AD Rules. The normal value is, therefore, determined as US\$\*\*\*\*/Kg. for all other exporters/producers from EU.

### **EXPORT PRICE**

33. The export price is determined on the basis of lowest selling price to the independent buyers by M/s Merck, India. To arrive at ex-factory export price, adjustments have been considered as adopted for the cooperative exporters. The ex-factory export price is determined as US\$\*\*\*\*/Kg. for other exporters/producers.

### **DUMPING- MARGIN**

34. Based on the normal value and export price as determined above, the Authority assessed the dumping margin as under:

Exporter/Producer	Normal Value (US\$/Kg)	Export Price (US\$/Kg)	Dumping margin as % of Export Price
M/s Merck, EU	****	****	184.68%
Other exporters/producers from EU	****	****	195.06%
All exporters/producers from USA	****	****	87.38%

## **F. METHODOLOGY FOR INJURY DETERMINATION AND EXAMINATION OF CAUSAL LINK**

### **F.1 VIEWS OF THE DOMESTIC INDUSTRY**

35. The views of domestic industry have been summarised below;

(i) The domestic industry has submitted that no exhaustive information with regard to imports of the product under consideration is publicly available, therefore demand has been assessed based on the import volumes from different sources. Imports from subject countries are very significant in absolute terms and it is significant in relation to both production and demand of the subject goods in India.

(ii) The landed value of imports from the subject countries has below the net sales realization of the domestic industry, thus resulting in significant price undercutting and depressing the prices of the domestic industry.

(iii) The exporters from the subject countries have significantly reduced their prices in respect of exports to India whereas they continue to sell the material at higher prices in their domestic markets. The domestic industry is forced to reduce the domestic selling prices of the subject goods to compete with the landed value of imports.

(iv) The production of the domestic industry has increased. They have set up a new plant in 2001-02 in view of rising demand of the product, which commenced commercial production from February, 2002. However, domestic industry could not optimize its capacity of the new plant. In spite of increase in production and sufficient demand, capacity utilization has declined.

(v) Sales volume of the domestic industry increased between 2000-01 and 2001-02 consequent to rising demand of the subject goods. It has declined in the POI as compared to previous year. The domestic industry had anticipated much higher sales volumes in view of rising demand of the product in the Country. However, imports from the subject countries have prevented increase its sales volumes to expected levels. The sales have rather declined in POI, whereas the same should have registered an increase.

(vi) Average stocks of the domestic industry have increased over the years. This increase was witnessed in spite of significant increase in demand and is due to decline in sales volumes in the domestic market.

(vii) The domestic industry was forced to reduce its selling price inspite of increase in its unit cost of production. The imports have had severe adverse price effect on the domestic industry and are suppressing the prices in the market. Due to price suppression, the average prices of various types of pigments have declined, rather prices in respect of various grades also have declined.

(viii) The domestic industry was making profits till 2001-02. They enhanced its capacity with the projections that it would post higher profits and returns. However, due to dumping from subject countries, the domestic industry is now facing severe financial losses.

(ix) The Domestic industry was forced to curtail its employment level due to dumped imports in a situation where the domestic industry has been expanding and should have rather increased employment. The wages has declined after increasing in 2002-03 with a decline in employment level.

(x) Since, several grades of subject goods are being produced and sold, it would not be feasible to have one bench mark price for all the product types due to wide variation in prices. Therefore, Anti-dumping duty may be recommended as fixed amounts.

(xi) In the instant case, the various grades share the same capacity. Therefore, it would be appropriate to assess the injury to the domestic industry for like article as a whole. The domestic industry has rebutted the argument of exporters that injury analysis must be done separately for each grade is misplaced.

## **F.2 VIEWS OF THE EXPORTER / IMPORTER**

36. The views of exporter/importer have been summarised below;

(i) They have submitted that the selling price of Merck product is always higher than the Indian products in India. This indicates that the price suppression / depression has been implemented by Indian producers and they are responsible for depressing the overall market.

(ii) The sales, production, market share, ROI has shown a improving trend during the POI. The exporter claims that the injury, if any, to Indian industry does not exist due to dumping but on account of internal reasons and reasons other than dumping.

(iii) It is submitted that M/s Merck, India does not operate as a trader, rather It has a team of product specialists to educate the customers in India about the technology and product application.

(iv) The domestic industry has gone for unstable expansion programme in year 2001-2002, when the market was depressed, and is now staking a claim that their financials are affected by dumping. The domestic industry has invested a huge capital

for increasing the plant capacity at Mahad in years 2001-2002 which was based on a feasibility study considering exports projections and is now staking claims of being impacted by dumping. High investments has resulted in higher borrowings and impacted the interest costs, contributing for its poor financials, if any.

(v) The exporter has submitted that the recession in textile printing industry has impacted the domestic industry due to displaced demand of about 250 tons. The textile industry recession had forced many of the master batch manufacturers and printers to shut down business. This reduction in demand is being mistakenly attributed as volume effect of dumping by Merck. One of the largest sellers of cosmetic products (Hindustan Lever Limited, a user of cosmetic grade pigments) had decided to discontinue the usage of pearl pigments from year 2002-2003. This might have affected the business of pigments. The loss of pearl coating by Hindustan Lever Limited and textile industry recession has adversely affected the domestic industry by more than 25%, resulted in reduction in volume demand to the extent of 400 MT p.a.

(vi) The exporter claimed that the Cosmetic grade pigments sold by them are of superior grade and serve extended applications compared to M/s Sudarshan Chemicals Industries Limited. The domestic industry does not produce similar product under the cosmetic grade pigments compared to Merck, which is evident from the price list of the domestic industry. It is important to note that leading users (Modi, Revlon, Avon) of cosmetic grade pigments have stated that the cosmetic grade pigments available in the Indian markets are not meeting the required standard and hence they use Merck grade pigments for cosmetic applications.

(vii) In the comments to the disclosure statement the following issues have been raised,

- the domestic sales and the export sales volumes has increased.
- the capacity utilisation has declined due to increase in capacity and shrinkage of demand mainly due to change in pattern of consumption by printing textile industries and cosmetic industries. The additional capacity coupled with lower plant utilisation resulted in higher incidence of fixed costs.
- The period of injury analysis should have been three years prior to investigation for the proper understanding and an analysis of trend of growth. The domestic industry is the sole producer and trying to consolidate its monopolistic position by increasing capacity and capturing domestic market in auto and cosmetic grades with the help of anti dumping duties.
- The undercutting of the domestic prices should be examined at which M/s. Merck, sells their product to independent buyers not with the landed value of imports.
- The non-injurious price has been determined for a large number of grades of product under consideration. The price underselling should be the difference between the non-injurious price and net sales realisation.
- Decline in return on investment is due to additional investments made by the company.
- The profit has declined due to unutilised capacity.

### **F.3 EXAMINATION BY THE AUTHORITY**

#### **Cumulative assessment of injury:**

37. As per annexure-II (iii) of AD Rules, in cases where imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to Anti-dumping investigation, the Authority is required to cumulatively assess effect of such imports, only when it determines that (a) the margin of dumping established in relation to imports from each country is more than 2% expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is 3% of the imports of like article -- and (b) cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic article. The Authority has found that the margin of dumping in respect of subject countries is more than 2%. The volume of imports from these subject countries collectively are more than 95% of total imports.

38. On examination of information, the Authority found that the prices of the subject goods coming from subject countries are almost comparable and do not vary significantly. These have been imported under the same tariff classification. The user industry for the imported product and the domestic product is the same. The Authority has, therefore, found it appropriate to cumulatively assess the effect of imports of the subject goods on the domestically produced like article in the light of conditions of competition between the imported products and the conditions of competition between the imported products and domestic like product. It is appropriate to examine cumulatively the effect of injury by imports of subject goods from subject countries on the domestic industry in this investigation.

39. The principles for determination of injury set out in Annexure-II of the Anti-Dumping Rules lay down,

*"A determination of injury shall involve an objective examination of both (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for like article and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products."*

As regards the impact of the dumped imports on the domestic industry para (iv) of Annexure-II of the Anti Dumping Rules states:

*"The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the Industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilisation of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of margin of dumping actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment wages growth, ability to raise capital investments."*

**Volume and market share in dumped imports**

40. The imports from subject countries have increased in absolute terms during the POI. It has also increased in comparison to production and demand of the domestic industry during the POI. In terms of market share in imports, the share of subject countries has increased from 92.96% during 2000-2001 to 97.41% during the POI. The market share in imports from other countries has decreased from 7.04% in 2000-2001 to 2.59% during the POI.

	2000-2001		2001-2002		POI	
	Volume	Value	Volume	Value	Volume	Value
	Kg.	Rupees	Kg.	Rupees	Kg.	Rupees
Share in total imports (%)						
EU	92.61		88.51		89.85	
USA	0.35		0.00		7.56	
Subject countries	92.96		88.51		97.41	
Other countries	7.04		11.49		2.59	
Total	100.00		100.00		100.00	

**Market share in demand**

41. The import volumes have been considered on the basis of data provided by the responding exporters, the Authority has assessed the demand on the same. It is also relevant to note that none of the interested parties has disputed the demand assessed by the Authority and the domestic industry has itself assessed demand in this region of 1000MT to 1200MT. The volume of share of domestic industry in demand has decreased from 63.78% during 2000-2001 to 57.86% during the POI whereas the share of dumped imports has increased in demand has increased from 33.67% in 2000-2001 to 41.05% during the POI (annualised). The demand has increased from 784 MT during 2000-2001 to 1100 MT during the POI (annualised).

	2000-2001	2001-2002	POI	POI (annualised)
Imports (MT)				
EC	263	208	624.92	416.61
USA	1	-	52.6	35.07
Imports from subject countries	264	208	677.52	451.68
Imports from other countries	20	27	18	12
Total imports	284	235	695.52	463.68
Domestic sales	500	638	955	637
Demand	784	873	1651	1100
Share in demand (%)				

Subject countries	33.67	23.83	41.05	41.05
Other countries	3	3	1	1
Domestic industry	63.78	73.08	57.86	57.86

#### **Actual and potential decline in sales**

42. The sales of domestic industry have increased from 100 during 2000-2001 to 115.03 during the POI (annualised). The export sales have increased from 100 to 225.91 during the respective period. The overall sales of the domestic industry has increased from 100 during 2000-2001 to 127.34 during the POI.

Sales	Unit	2000-01	2001-02	POI	POI (Annualised)
Quantity Indexed					
Domestic sales		100	128.01	172.55	115.03
Export sales		100	124.37	338.86	225.91
Total		100	127.60	191	127.34

#### **Production & Capacity Utilisation**

43. The installed capacity of the domestic industry has increased from 900MT during 2000-2001 to 1500MT during the POI(annualized). The installed capacity of the domestic industry has increased during 2002-2003 as additional capacity has been added with a creation of a new manufacturing unit at Mahad. The production of the domestic industry has increased from 100 during the 2000-2001 to 125 during the POI (annualised). The capacity utilization of the domestic industry has decreased from 100 during 2000-2001 to 75.17 during the POI(annualized) in the increased demand. The domestic industry has increased their installed capacity/ by 66.6% whereas the production has increased by 25% only in the increasing demand of the subject goods.

	Unit	2000-01	2001-02	POI	POI (Annualised)
Indexed					
Capacity utilisation		100.00	133.81	75.17	75.17
Production		100	141	188	125

#### **Growth**

44. The sales volume of the domestic industry has decreased from 28.01% during 2001-2002 to -9.18% during the POI (annualised) whereas in value terms it has decreased from 35.26% during 2001-2002 to -8.93% during the POI (annualised). During the same period the production of the domestic industry has declined from 41.25% in 2001-2002 to -6.37% during the POI (annualised). In the similar situation the share of imports from the subject countries has increased from 92.96% to 97.41% during the POI (annualised). It is evident from the above that the growth of the domestic industry has hampered due to the dumped imports from subject countries.

	Unit	2000-01	2001-02	POI	POI (Annualised)
Domestic sales (volume)	%		28.01	36.23	-9.18
Domestic sales (Value)	%		35.26	36.60	-8.93
Production	%		41.25	40.45	-6.37

### **Price undercutting**

45. With reference to the argument raised by the exporter it is clarified that the Authority has considered resale price of M/s Merck, India and worked backward to determine CIF export price by deducting expenses incurred by Merck, India. It is noted that the resale price of Merck India would not be relevant for comparing with net ex-factory selling price of domestic industry, excluding discounts & commission, freight & transportation, taxes & duties. The Authority has compared the landed value based on resale price of Merck with net sales realization of the domestic industry. The undercutting has been evaluated for both the grades, which constitute more than 90% of the total imports, and it was found that the weighted average undercutting is significant. The undercutting margin was within a range of 9% to 18% during the POI.

### **Price Underselling**

46. Price underselling is an important indicator of assessment of injury. Non injurious price has been worked out and compared the same with the landed value to arrive at the extent of price underselling. The non-injurious price has been evaluated for the domestic producers by appropriately considering the cost of production for the product under consideration during the POI. In order to eliminate inefficiencies, capacity utilisation has been normated.

47. The analysis shows that the weighted average landed value based on the constructed export price of the subject goods from subject countries is less than the non injurious price determined for the domestic industry during the period of investigation. In the instant case, it is found that there is significant price undercutting by the dumped imports, the imports are depressing the prices of the domestic industry and that the dumped imports are forcing the domestic industry to undersell the product. The Authority has determined the underselling for both the grades of the subject goods and it was found that weighted average landed value of imports from subject countries undersells the non injurious price significantly determined for the domestic industry. The underselling margin was within a range of 31% to 42% during the POI.

### **Factors affecting domestic prices**

48. The Authority noted that the selling prices of the domestic industry are linked to the raw material cost and prices of the subject goods from subject countries. The landed value based on constructed export price from subject countries is less than the



selling prices and the non-injurious price determined for the domestic industry impacting the prices of the domestic industry. It is noted that the selling price of the domestic industry is suppressed due to dumped imports from subject countries as they could not raise it due to landed value of dumped imports. It is also observed that the cost of production of subject goods has increased whereas selling price of the subject goods for the domestic industry has declined resulting in price suppression due to dumped imports.

### **Magnitude of margin of dumping**

49. It is noted that the magnitude of margin of dumping of subject goods from subject countries is significant. With regards to determination of dumping, the Authority has considered resale price of M/s Merck, India to the independent buyers in India. Since export price has been constructed, all expenses incurred by Merck, India have been considered to determine ex-factory realization of Merck, Germany.

### **Evidence of lost contracts**

50. The domestic industry did not produce any evidence regarding loss of order or contract due to dumped imports of subject goods from subject countries.

### **Inventory**

51. It has been observed that the inventory of the domestic industry has increased during the POI in absolute numbers and value. It is also found that in terms of months' sales quantity and months' sales value, the inventory has increased during the POI (annualised) as compared to the base year.

	Unit	2000-01	2001-02	POI	POI (Annualised)
Indexed					
Inventory as month's sales					
Quantity		100	200.70	107.26	160.90
Value		100	239.29	249.98	249.25

### **Return on Investment and ability to raise capital**

52. The return on capital employed for domestic industry has decreased from 5.94% during 2000-2001 to -4.33% during the POI (annualised). It is observed that the industry which was having positive return on capital employed during 2000-2001 has entered into negative growth on return during the POI(annualised).

Return on Investment	Unit	2000-01	2001-02	POI	POI (Annualised)
Return on Capital Employed	%	5.94	5.77	-4.33	-4.33
Indexed		100	92.22	-72.85	-72.85

**Profitability**

53. The profitability of the domestic industry has declined when the production has increased during the POI(annualized) in the increased demand. The cost of production has increased from 100 during 2000-2001 to 113.15 during the POI (annualised) whereas the selling price has declined from 100 during 2000-2001 to 92.51 during the POI (annualised). It is observed that the cost of production has increased whereas the selling price of the product has declined in the same period and because of this reason the industry which was earning a profit in the base year started incurring losses from 2001-2002.

Rs/Kg	2000-2001	2001-2002	POI	POI(annualised)
Indexed				
Selling price	100	100.95	92.51	92.51
Cost of production	100	100.67	113.81	113.81
Profit / loss	100	-91.41	-775.45	-775.45

**Employment**

54. The domestic industry has improved its productivity due to curtailment in the number of employees during the POI (annualised) compared with the base year and increase in production during POI. The domestic industry has claimed that the number of employees have been reduced as a cost cutting measure to improve the productivity and reduce the losses suffered by them. It is noted that change in level of employment has not caused any injury to the domestic industry.

Employees	Unit	2000-01	2001-02	POI	POI(Annualised)
Indexed					
No. of employees		100	102.8	93.1	62
Productivity per employee		100	141.25	125.29	125.29

**Productivity**

55. Productivity of the domestic industry, as reflected in terms of production per employee, has improved during the POI. It can not, therefore, be said that the domestic industry has suffered injury due to decline in productivity.

Productivity	Unit	2000-01	2001-02	2002-03	POI (Annualised)
Indexed					
No. of employees		100	102.8	93.1	62
Productivity per employee		100	141.25	125.29	125.29

**Wages & Salary**

56. The Wages and salary per employee of the domestic industry has increased during the period of investigation. It has increased from 100 during 2000-2001 to 106 during the POI (annualised).

Wages & Salary	2000-01	2001-02	POI	POI (Annualised)
Indexed	100	87	106	106

**Cash Flow**

57. The domestic industry is a multi product company involved in production of other products also. Cash flow of domestic industry is reflective of operations relating to company as a whole. However, the Authority has examined the performance of the domestic industry in terms of cash profit in relation to product under consideration. The cash profits of the domestic industry in relation to the product under consideration has been given below.

	2000-2001	2001-2002	POI	POI (Annualised)
Index	100	129.47	38.68	25.78

**Conclusions on Injury**

58. On examination of injury parameters, the following conclusions are made by the Authority regarding injury suffered by the domestic industry.

- a) Imports from the subject countries have increased significantly in absolute terms.
- b) Imports are significantly undercutting the selling prices of the domestic industry
- c) The profitability of the domestic industry has been eroded resulting into financial losses.
- d) The petitioner is suffering from price suppression as cost of production of the subject goods has increased whereas the selling price of the domestic has declined and the dumped imports have suppressed the domestic selling price of the domestic industry.
- e) The petitioner is suffering from price underselling as landed price of the subject goods are below the non injurious price of the domestic industry.
- f) The domestic industry has suffered material injury.

**Causal Link And Other Factors**

59. The authority has examined the submissions made by interested parties in respect of the issue of causal link. A detailed examination was made by the Authority with regards to the issues pertaining to the material injury to the domestic industry and

causal link between the material injury to the domestic industry and dumped imports. Paragraph (v) of Annexure II of the Anti-dumping Rules reads as under:

*" It must be demonstrated that the dumped imports are, through the effects of dumping, as set forth in paragraphs (ii) and (iv) above, causing injury to the domestic industry. The demonstration of a causal relationship between the dumped imports and the injury to the domestic industry shall be based on an examination of relevant evidence before the designated authority. The designated authority shall also examine any known factors other than the dumped imports which at the same time are injuring the domestic industry, and the injury caused by these other factors must not be attributed to the dumped imports. Factors which may be relevant in this respect include, inter alia, the volume and prices of imports not sold at dumping prices, contraction in demand or changes in the patterns of consumption, trade restrictive practices of and comapplication between the foreign and domestic producers, developments in technology and the export performance and the productivity of the domestic industry."*

60. The Authority notes that market share of the domestic industry has decreased from 63.78% during the 2000-2001 to 57.86% during the POI( annualised) in increased demand of the subject goods. In examining the price effect whether the dumped imports have significantly undercut the price of the like product in India, the Authority found that the landed value of the subject goods from subject countries was lower than the net selling price of the domestic industry thereby undercuts the selling price of the domestic industry significantly. Moreover, undercutting to the domestic prices did not show the full impact of the dumped imports since the domestic prices were depressed due to low landed value. It is found that the price undercutting and the pricing behaviour of landed value of imports has forced the domestic industry to reduce the prices even less than the cost of production, resulting in financial losses to the domestic industry. The domestic industry could not increase the selling price as a result of increase in the cost of production due to dumped imports and suffered financial losses during the POI. This undercutting along with price depression in effect eroded the profitability of the domestic industry. It is noted that dumped imports were causing material injury to the domestic industry.

61. The import from other sources is de-minimis, hence imports from other countries has neither volume nor price effects on the domestic industry. The demand of the subject goods has registered a positive growth. The assessed demand of the subject goods has increased from 784 MT in 2000-2001 to 1100 MT during the POI in the increased production. Thus, contraction in demand is not a possible reason, which could have contributed to injury to the domestic industry. The pattern of consumption with regard to the product under consideration has not undergone any change. Changes in the pattern of consumption could not have, therefore, contributed to the injury to the domestic industry.

62. The exports of subject goods have increased in proportion to the production of the subject good. The growth in exports is higher than the increase in production and domestic industry is able to maintain its production due to increase in exports other wise production in period of investigation would have declined much more if the domestic industry would not have exported. Hence, possible deterioration in export performance is not the cause for injury to the domestic industry. There is no trade

restrictive practice, which could have contributed to the injury to the domestic industry. Technology for production of the product has not undergone any change. Developments in technology is, therefore, not a factor of injury.

63. Productivity of the domestic industry has increased. However, applicant has faced higher financial losses in spite of increase in productivity. It has been observed that even at the lower level of productivity applicant was earning profits in the base year, whereas at higher level of productivity applicant is suffering financial losses.

64. The exporters have argued that other factors would have caused injury to the domestic industry. They have further stated that domestic industry has been suffering financial losses in Agro Division. Domestic industry rebutted the arguments of the exporters stating that they maintain separate accounting information with regard to product under consideration. The Authority examined the arguments of the interested parties and found that the domestic industry has provided the information for the product under consideration and findings have been made on the basis of verified data of the domestic industry for the subject goods. As regards the argument of exporter that the domestic industry suffering injury due to decline in demand, the Authority examined and found that the sales volume of the domestic industry has infact increased in increased demand scenario. Therefore, decline in sales volume in these sector as argued by the exporters was not a possible reason of injury to the domestic industry.

65. The domestic industry in their comments to the disclosure statement has submitted that the non-injurious price assessed for the domestic industry is grossly inadequate without considering the costs associated in production and sale of such products. M/s. Merck has argued that the methodology of calculating non-injurious price has not disclosed. They have also stated that depreciation cost, interest cost, assets under consideration for the product under consideration and non feasible investment plans to enhance capacity would be the major reasons for high input / manufacturing cost and corresponding non-injurious price of the product. However, it is clarified that the Authority had taken note of the elaborate submissions of Merck on possible high costs on account of interest, depreciation, and assets under consideration. In view of the argument of the exporter, it is noted that the non-injurious price is determined taking into consideration of all the relevant factors including costs of raw material used in production of subject goods, the consumption thereof, the cost of utilities, interest cost, cost of labour, depreciation cost and selling & distribution expenses and cost of investments. It is also noted that the non-injurious price for the product has been determined at normated level of capacity utilisation.

66. The exporter has submitted that plant utilization of the domestic industry has been low during the POI. The domestic industry argued that the POI was the first full year of commercial production of Mahad plant and the capacity utilisation of the company for the subject goods has been low as compared to previous years. This issue was examined during the course of verification. The investigation has shown that an increase in production capacity has occurred during 2001-2001 and POI. It is found that the company has achieved capacity utilisation of 74% in 2001-2002 and additional capacity has been created in view of increasing demand scenario and export potential for the subject goods. The domestic industry has argued that in this type of product higher utilisation level is not possible for such industries as in the field of

petrochemicals, particularly when a number of different grades of the subject goods are to be produced. The impact lower capacity utilisation would have felt on higher incidence of overhead cost per unit of production and it could have impacted the financial loss to the domestic industry. It is also noted that the capacity utilization has been normated to negate the higher incidence of cost and inefficiency due to other reasons. The non-injurious price for the product has been determined at normated level of capacity utilisation and it is found that the domestic industry suffered injury as a result of dumped imports. It is also observed that the dumped imports undersells the non-injurious price determined for the domestic industry significantly even when the normated capacity utilization of the domestic industry has been taken for determination of non-injurious price. It is thus noted that the impact of lower capacity utilization in terms of higher allocation of fixed cost and injury (self inflicted) has been segregated on this account.

67. The domestic industry has submitted that the Authority has constructed the export price for the purpose of dumping margin, therefore anti dumping duty either in terms of variable duties or ad-valorem duties will not be appropriate. They have further argued that in a situation where the export price has been constructed for the purpose of dumping and injury analysis, a reference price or ad-valorem duties is not desirable in a situation when the export price itself has been found unreliable, which will not address the injury to the domestic industry. Since there are large number of grades under the industrial segment having price variation, one single benchmark reference price will not appropriate. In this situation the domestic industry has submitted that a fixed duty may be considered. The exporters have argued that a variable duty in the form of reference price may be considered for the product under consideration. The Authority examined the arguments raised by the interested parties regarding the form of duty to be considered in this investigation. It is noted that different forms of duties have different implication on a case to case basis. However in this case since the product under consideration is having different grades of mica pearl pigment excluding cosmetic and automotive grades at a varying prices, it is considered appropriate to recommend fixed duty for the product under consideration.

### **INDIAN INDUSTRY'S INTEREST & OTHER ISSUES**

68. The Authority holds that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the domestic industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition.

69. The Authority also recognizes that though the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products, however, fair competition in the Indian market will not be reduced by these anti-dumping measures. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by the dumping practices and would prevent the decline of the domestic industry and would help in maintaining availability of wider choice of the subject goods to the consumers.

**LANDED VALUE**

70. The landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the customs under Customs Tariff Act, 1962 and applicable level of custom duties except duties levied under Section 3, 3A, 8B, 9, 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

**CONCLUSIONS:**

71. The Authority has, after considering the foregoing, come to the conclusion that:

- a) Subject goods originating in or exported from subject countries have been exported to India below its normal value.
- b) The domestic industry has suffered material injury.
- c) The injury has been caused to the domestic industry by dumping of the subject goods originating in or exported from the subject countries.
- d) The Authority thus considers necessary to recommend anti-dumping duty on imports of subject goods falling under Chapter 32 originating in or exported from the subject countries.

72. Accordingly the Authority recommends the definitive anti dumping duty be imposed on all imports of subject goods originating in/or exported from subject countries. The anti dumping duty shall be the amount mentioned in Col. 9 of the following table to be imposed from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government on all the imports of subject goods falling under Chapter 32 of the Customs Tariff Act originating in or exported from the countries mentioned below:-

Sl. No	Sub-heading	Description of goods	Specification	Country of origin	Country of Export	Producer	Exporter	Amount	Unit of Measurement	Currency
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
1.	Chapter 32	Mica pearl pigment excluding cosmetic and automotive grade		EU	EU	M/s. Merck, Germany	M/s. Merck, Germany	1.25	Kg.	US\$
2.	Chapter 32	Mica pearl pigment excluding cosmetic and automotive grade		EU	EU	M/s. Merck, Germany	Any exporter	1.25	Kg.	US\$
3.	Chapter 32	Mica pearl pigment excluding cosmetic and automotive grade		EU	Any country	Any producer	Any exporter	1.25	Kg.	US\$
4.	Chapter 32	Mica pearl pigment excluding cosmetic and automotive grade		USA	USA	M/s. Merck, USA	M/s. Merck, USA	2.27	Kg.	US\$
5.	Chapter 32	Mica pearl pigment excluding cosmetic and automotive grade		USA	USA	M/s. Merck, USA	Any exporter	2.27	Kg.	US\$
6.	Chapter 32	Mica pearl pigment excluding cosmetic and automotive grade		USA	Any country	Any producer	Any exporter	2.27	Kg.	US\$

73. An appeal against this order shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and Customs Tariff Rules, 1995.

CHRISTY FERNANDEZ, Designated Authority